Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

तितिक्खं परमं णच्चा।

तितिक्षा मोक्ष का परम साधन है।

❀❀❀

परिग्गहे णिविट्ठाणं,
वेरं तेसिं पवड्ढई।

जो परिग्रह के अर्जन, संरक्षण और भोग में रत हैं, उनका वैर बढ़ता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 35 • 5 -11 जून, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-06-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

न स्वयं डरो, न दूसरों को डराओ : आचार्यश्री महाश्रमण

संजान, २६ मई, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वाङ्मय में चार संज्ञाएँ अथवा दस संज्ञाएँ बताई गई हैं। चार संज्ञाओं में एक है–आहार संज्ञा। जीवन को चलाने के लिए प्राणी आहार करता है। दूसरी है–भय संज्ञा जिससे प्राणी भयभीत होता है। डरना अपने आपमें एक दुःख है। अभय आदमी सुखी होता है।

प्रभु महावीर कितने अभय रहे। उन्होंने भय को जीत लिया था। आदमी अनेक कारणों से भयभीत हो सकता है। अभय बनने के लिए अभय की अनुप्रेक्षा करें। दूसरों को भी भयभीत करने का प्रयास न करें। अभय के दो पक्ष हो जाते हैं, न स्वयं डरो, न दूसरों को डराओ। ये दोनों पक्ष हमारे में विकसित हों।

व्यवहार में कहीं-कहीं डरना या डराना सात्विक रूप में हो सकता है। जैसे अपने से बड़े या गुरु का भय होता है। इससे गलती में सुधार हो सकता है। वीतराग में तो पापभीरुता होती है। वे तो पाप से डरते हैं। हम भी पापभीरू बनें। जहाँ मोह-ममता है, वहाँ भय को पैदा होने का मौका मिल सकता है। अपरिग्रह की भावना से अभय की चेतना पुष्ट हो सकती है।

हम अभयदाता बनें यह एक श्रेष्ठ दान है। अभय की साधना अहिंसा से जुड़ा तत्त्व भी है। हमारा चिंतन अच्छा हो तो हम अभय की साधना में विकास कर सकते हैं। भय से बचने के लिए अपने ईष्ट का भी स्मरण किया जा सकता है। जैसे हमारे यहाँ 'ॐ भिक्षु, जय भिक्षु, अभय को पुष्ट करने वाला है।

दुःख से प्राणी डरते हैं। हमारा दोनों पक्षों में अभय का विकास हो, न डरना न डराना।

पूज्यप्रवर के स्वागत में वीणा परिवार से महावीर आच्छा, प्रिया आच्छा ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने मारुस व मातुस को विस्तार से समझाया।

सत् साहित्य पढ़ें, सदाचरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भिलाड़-सरीगाम, २५ मई, २०२३

महापथ अनुगामी आचार्यश्री महाश्रमण जी वृहद मुंबई की ओर अग्रसर हैं।

गुरुवार को भिलाड़ में परम पावन ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया कि पहले ज्ञान फिर दया-आचरण। हमारी दुनिया में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान हमारा ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम या क्षय से संबंधित है। हम कौन-सा ज्ञान अर्जित करें? शब्द शास्त्र-ज्ञान तो अनंत है। जीवन अल्पकाल है और कई बार बाधाएँ भी आ जाती हैं। जो सारभूत है, उसकी उपासना करो। जो उपयोगी ज्यादा है, उसको ग्रहण करें।

सत्-साहित्य की संगत करें। कुछ गहरे ग्रंथों को पढ़ने का प्रयास करें तो गहरी बात जानने को मिल सकती है। ज्ञान प्राप्त कर सम्यक् आचार करो। आचार शून्य ज्ञान और ज्ञान शून्य आचार दोनों ही मानो अधूरे हैं। दोनों साथ होने से जीवन अच्छा बन सकता है।

विद्यालयों में ज्ञान के साथ जब आचार मिलता है, तो विद्यार्थियों में परिपूर्णता आ सकती है। संस्कार अच्छे हों। जीवन विज्ञान से आचार अच्छा मिल सकता है। जीवन में ईमानदारी, नैतिकता हो तो उसकी चेतना अच्छी रह सकती है। आगे भी अच्छा होने की संभावना रह सकती है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

साधना से मिलता है आत्मिक सुख : आचार्यश्री महाश्रमण

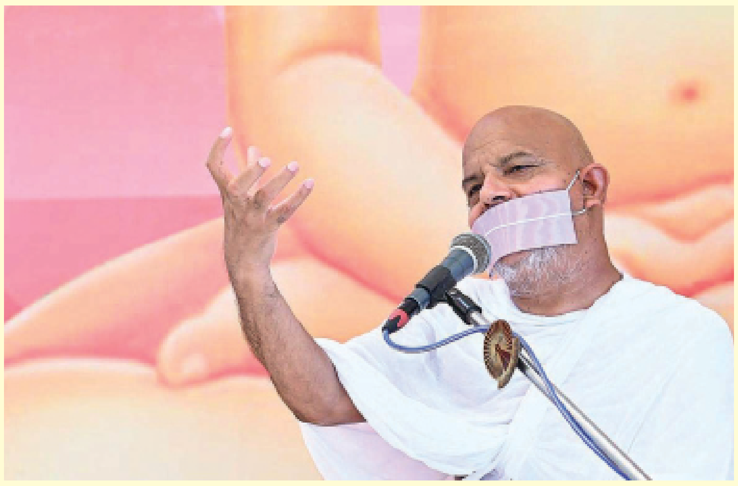

दादरा, (नगर हवेली) २३ मई, २०२३

अनंत आस्था के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगलवार को दुगड़ परिवार के फैक्ट्री परिसर में आयोजित प्रवचन में उपस्थित श्रद्धालुओं को मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि यह प्रश्न हो सकता है कि इस दुनिया में सुखी जीवन कैसे जीया जा सकता है। आदमी में सुख पाने की लालसा और दुःख मुक्त रहने की भावना रहती है। दुनिया का हर प्राणी सुख चाहता है, कोई दुःखी रहना नहीं चाहता।

सुख दो प्रकार का हो जाता है–पदार्थ जन्य सुख और आत्मिक सुख। पदार्थ जन्य सुख में भी अच्छी अनुभूति हो सकती है, सुविधा और क्षणिक सुख मिल सकता है। परंतु निर्जरा से कर्म कटने से जो सुख मिलता है वह आत्मिक सुख होता है। एक तात्कालिक सुख होता है, एक शाश्वत सुख होता है। शाश्वत सुख बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। वह तो एकांत सुख है, फिर दुःख की कोई बात है ही नहीं।

तात्कालिक सुख और सुविधा पदार्थों से प्राप्त हो सकती है। पर आत्मिक सुख साधना से मिल सकता है। शाश्वत सुख के लिए पहली बात है कि अपने आपको तपाओ। तपस्या करो, कठोरता का जीवन जीने का प्रयास करो। आदमी पुरुषार्थ करे। भाग्यवाद जानने की चीज है, पर कर्तव्य पुरुषार्थवाद है। परिश्रमशील का लक्ष्मी वरण करती है। भाग्य की बात छोटी बात है। जीवन में सम्यक् पुरुषार्थ हो।

दूसरी बात है, कामनाओं को छोड़ो। भौतिक कामना न रखें। अर्थार्जन में नैतिकता रहे। कामनाओं का अतिक्रमण करो, दुःख समाप्त हो जाएगा। तीसरी बात है कि द्वेष को काटो, ईर्ष्या मत करो, प्रमोद भावना रखो। राग को दूर करो, आसक्ति मत रखो। ये सब होने से आदमी पवित्र आत्मिक व निर्जराजन्य सुख प्राप्त कर सकता है। धर्मशास्त्र पढ़ने से जीवन अच्छा बन सकता है।

हम अणुव्रत यात्रा में सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बातें बता रहे हैं। इनसे आत्मा सुखी रह सकती है। आदमी सद्गुणों से साधु-अच्छा आदमी बन सकता है। हम मानव जीवन सद्गुणों से भरने का प्रयास करें तो यहाँ भी अच्छा और आगे भी अच्छा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हमारे भीतर आइस फैक्ट्री और शुगर फैक्ट्री हो, इनसे हमारा जीवन अच्छा बन सकता है। हमारा मस्तिष्क ठंडा हो और मुँह में मिठास हो। इनसे जीवन में शांति रह सकती है। इनसे हम दूसरों को भी शांति दे सकते हैं। हमारे कषाय मंद रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वामी नारायण समाज से स्वामी कपिल जीवनदास, मनोज दुगड़, राजेश दुगड़, युग सुराणा, सुनीता सुराणा, खुशबू दुगड़, भूपेश कोठारी, गुरुद्वारा कमिटी से सुरविंद्र सिंह, नरेंद्र सुराणा ने अपनी-अपनी भावना अभिव्यक्त की।

दुगड़ परिवार ने समूह गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल ने गीत द्वारा अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ वह व्यक्ति निष्प्राण है, जिसके जीवन में ईमानदारी का प्राण नहीं है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन में अच्छे कार्य करें : आचार्यश्री महाश्रमण

उमरगाँव, २७ मई, २०२३

ज्ञान दर्शन एवं चारित्र संपन्न आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर उमरगाँव पधारे। उमरगाँव गुजरात-महाराष्ट्र का बॉर्डर है। रविवार को परम पावन का गुजरात से महाराष्ट्र में पदार्पण हो सकेगा।

सम्यक् ज्ञान प्रदाता ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में आस्तिकवाद विचारधारा भी है और नास्तिकवाद विचारधारा भी एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है—पुनर्जन्मवाद। आस्तिकवाद, विचारधारा पुनर्जन्मवाद को स्वीकार करती है। जबकि नास्तिकवाद विचारधारा ने पुनर्जन्मवाद को अस्वीकार किया है।

प्रश्न उठता है कि पुनर्जन्म क्यों होता है? आध्यात्मिक जगत में आत्मा की बात आती है। आत्मा अनादिकाल से है। अनंत-अनंत आत्माएँ हमेशा थी, हैं और रहेंगी। जितने अणु-परमाणु दुनिया में अनंत काल पहले थे, उतने ही आज हैं और हमेशा रहेंगे। एक भी आत्मा न नई पैदा होती है और न ही विनाश को प्राप्त होती है। पर्याय परिवर्तन रूपांतरण होता रहता है।

पुनर्जन्म स्थायी रूप से आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है तो आत्मा या तो मोक्ष में रहेगी या संसारी अवस्था में रहेगी। जब आत्मा साधना के द्वारा सिद्धि को प्राप्त कर लेती है, तो मोक्ष प्राप्त हो जाता है। संसारी आत्मा संसार में भ्रमण करती रहती है। एक स्थूल शरीर को मृत्यु के समय छोड़कर दूसरे स्थूल शरीर को धारण कर लेती है। यह ही पुनर्जन्म है।

हमारे शरीर में चार कषाय हैं, ये पुनर्जन्म के मूल को सींचन देते रहते हैं और आत्मा आगे से आगे नए जीवन में जाती रहती है। पुनर्जन्म है, तो पूर्वजन्म तो हो ही गया। पुनर्जन्म की बातें हमें ग्रंथों में पढ़ने को मिलती है। अगर पुनर्जन्म नहीं होता तो झूठी बातें ग्रंथों में क्यों लिखी जाती।

अनेक व्यक्तियों को पूर्वजन्म की बात ज्ञात हो जाती है। इससे भी पुनर्जन्म की पुष्टि हो जाती है। फिर भी शंका हो तो भी आदमी को गलत कामों को परित्यक्त रखना चाहिए, अच्छे कार्य करने चाहिए। पुनर्जन्म है तो आगे अच्छा होगा। अगर नहीं है, तो कोई बात नहीं। अच्छा जीवन जीने में कोई नुकसान नहीं है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि साधना के मार्ग में आसक्ति न हो। जो अपनी इंद्रियों पर निग्रह कर लेता है, वह साधना में आगे बढ़ सकता है। क्रोध पर नियंत्रण हो व हमेशा दूसरों का भला सोचें। हम आचार्यप्रवर को देखें कि वे किस प्रकार परहित में निरत रहते हैं। परहित सरिस धर्म नहीं भाई।

मुनि अक्षय प्रकाश जी ने गुजरात यात्रा संपन्नता पर अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सुनील बोहरा, एम०के० मेहता हाईस्कूल से पवन चोरड़िया, अजयकुमार बैद, चंदन बाला, संजय मेहता, नीतू भंडारी, संतोष देवी चोपड़ा, कार्तिक भंसाली, खुशबू कोठारी, ध्रुव परमार, खुशबू परमार ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। महिला मंडल से वीणा मेहता ने अपने भाव व्यक्त किए। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा शिशु संस्कार बोध भाग-३ नवीन संस्करण का लोकार्पण

सूरत।

परमपूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में महासभा-ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत ज्ञानशाला के शिशु संस्कार बोध भाग-३ की नई पुस्तक का लोकार्पण संस्था शिरोमणी-महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया के करकमलों द्वारा किया गया।

पूज्यप्रवर ने नई पुस्तक का अवलोकन किया। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने भी इस नई पुस्तक का अवलोकन किया। श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ज्ञानशाला के संदर्भ में फरमाया कि ज्ञानशाला संस्कार निर्माण का अच्छा उपक्रम है। सभी प्रशिक्षिकाएँ व व्यवस्थापक इस ओर अधिक ध्यान दें कि जिससे कैसे बच्चों में ज्ञान का विकास हो, कैसे आध्यात्मिकता पुष्ट हो।

मुनि उदित कुमार जी खूब अच्छा काम कर रहे हैं एवं अपनी सूझ-बूझ व नई योजनाओं से ज्ञानशालाओं के संवर्धन में अच्छा मार्गदर्शन दे रहे हैं।

ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने कहा कि शिशु संस्कार बोध भाग- व २ का चित्रमय प्रकाशन पहले हो चुका है। पूज्यप्रवर के सान्निध्य में भाग ३ का लोकार्पण हो रहा है। ये सभी पुस्तकें हिंदी व अंग्रेजी भाषा में चित्रमय प्रकाशित होने से आकर्षक बनी हैं, जो बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पाठ्यक्रम संयोजना में ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी का विशेष श्रम व समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस पुस्तक के निर्माण में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों का अथक श्रम लगा है।

इस अवसर पर ज्ञानशाला प्रकोष्ठ से सुरेंद्र लुणिया, जितेंद्र छाजेड़ व ज्ञानशाला पाठ्यक्रम समिति सदस्य एवं इस पुस्तक के निर्माण में लगे प्रशिक्षक चांद छाजेड़, प्रियंका बोथरा व प्रेक्षा गोठी भी उपस्थित रहे।

सत् साहित्य पढ़ें, सदाचरण...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अनेक धर्म पंथ हैं, अनेक संत हैं। वे संत अपने-अपने अनुयायियों को धर्म के अच्छे संस्कार देने की प्रेरणा देते रहें तो आदमी कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है। आज यहाँ स्वामी नारायण संस्थान में आए हैं, भिलाड़ में अच्छा धार्मिक उत्थान का काम चलता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि ईशु ने कहा है, जो आदमी बच्चे की तरह होता है, वह परमात्मा के राज्य में प्रवेश कर सकता है। वह सहज और सरल होता है। भगवान महावीर ने भी धर्म के चार द्वार बताए हैं—उनमें एक है—ऋजुता। परम पूज्य जहाँ भी जाते हैं, लोग खींचे चले आते हैं, कारण आपमें ऋजुता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में निगम भाई वैध, अजयराज फूलफगर, स्वामी नारायण गुरुकुल से सम स्वामीजी, पूर्व मंत्री रमणभाई पाटकर ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत समिति द्वारा स्वामीजी व रमणभाई का सम्मान किया गया।

आर्चाश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर गीत

श्री तुलसी गुरुराज वंदन है

● शासनश्री साध्वी प्रशमरती ● साध्वी अमितयशा ●
साध्वी शांतिप्रभा ● साध्वी कारुण्यप्रभा ●

श्री तुलसी गुरुराज वंदन है।
कालू पर अधिराज वंदन है।।
चंदेरी भूमी बड़भागी कुल खटेड़ का सौभागी।
वंदना सुमर सौभागी सुत पाया है बडभागी।
लाडला नंदन है।।

आँखों में प्रेम झलकता चेहरे पर तेज चमकता।
वाणी में ओज टपकता सान्निध्य सुधा रस झरता।
तेज को वंदन।।

व्यक्तित्व तुम्हारा प्यारा कर्तृत्व तुम्हारा न्यारा।
तुलसी अंखियों का तारा सबको है दैत सहारा।
त्याग को वंदन है।

तेरी रचना सबको भाए सब देख-देख चमकाए।
शासन का भाग्य सराए गुरु महाश्रमण मन भाए।
सोच को वंदन है।।

तुम दूर भले हो तन से प्रभु निकट हमारे मन से।
झूडी इकतारी प्रभु तुमसे मेरा मानस हर पल हरसे।
ज्योति को वंदन है।।

देखी सागर सी गहराई हिमगिरी सी तब ऊँचाई।
दिनकर सम तव अरुणाई अवनि सी क्षमा सुहाई।।
धीर को वंदन।।

गुरु महाश्रमण का साया उनमें तब रूप समाया।
शासन को शिखर चढ़ाया गुरु महाश्रमण श्रम भाया।
शक्ति को वंदन है।।

अनोखी कार्यशाला 'दिशा' का आयोजन

अमराईवाड़ी।

मुनि डॉ० मदन कुमार जी के सान्निध्य में एवं मुनि सिद्धार्थ जी के निर्देशन में तेयुप द्वारा एक अनोखी कार्यशाला 'दिशा' का आयोजन सिंधवी भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री ने नवकार मंत्र से की। मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने दिशा कार्यशाला के बारे में अपना रोचक वक्तव्य दिया। मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि जीवन जीना कला है, अच्छा वक्ता बनना कला है, गुरुदेव हमें एक आध्यात्मिक दिशा दिखाते हैं, उस दिशा में हमें अपने कदम बढ़ाते रहना चाहिए।

सीपीएस जोनल ट्रेनर सुरभि चंडालिया एवं आकाश चंडालिया ने पधारे हुए दोनों वक्ता अनिल दुगड़ एवं पदम संचेती का परिचय दिया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया ने किया।

बैंगलुरु से पधारे हुए ट्रेनर अनिल दुगड़ ने कहा कि सबसे पहले हमें हमारा गोल क्या है, उसके प्रति जागरूक रहना चाहिए, उसको पूर्ण करने के लिए हमें अपना शेड्यूल बदलना चाहिए। उम्र कोई भी हो छोटी हो या बड़ी विजन हमारा साफ होना चाहिए।

बैंगलुरु से पधारे मुख्य वक्ता पदम संचेती ने सबसे पहले कहा कि हमें हमारा विजन तय कर देना चाहिए और उसकी वीजन तक पहुँचने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए, उसके बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री हितेश चपलोत ने किया एवं आभार ज्ञापन मुकेश सिंघवी ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर (१६ जून, २०२३)

देखा वर व्यक्तित्व तुम्हारा

❑ साध्वी नीतिप्रभा ❑

अहर्निश चलायमान इस कालचक्र ने समय-समय पर अनेक महापुरुषों को जन्म दिया। जिनके नाम इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षर में अंकित हैं। उन नामों में विश्व विश्रुत एक नाम था–आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी!

साध्वी तन्मयप्रभा जी की कविता की एक पंक्ति कई बार याद आ जाती है–

देखा वर कर्तृत्व तुम्हारा,
देखा वर व्यक्तित्व तुम्हारा।
देखा सदा प्रभुत्व तुम्हारा,
स्नेह भरा अपनत्व तुम्हारा।।

वास्तव में उनका कर्तृत्व और व्यक्तित्व बड़ा विलक्षण था। वे उच्च कोटि के तार्किक थे, मनीषी साहित्यकार व प्रभावशाली वक्ता थे, वे योग साधक थे और उनकी प्रज्ञा को देखकर तो ऐसा लगता था कि वे सरस्वती के वृहद पुत्र ही हों।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अणुव्रत का दर्शन लिखा, प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति का आविष्कार किया, आगम संपादन का दुष्कर कार्य कर जैन समाज को बहुत बड़ा गिफ्ट प्रदान किया, जो सबको आश्चर्य में डालने वाला है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के आगे साधना तो पीछे-पीछे तपस्या चलती थी। इनके दाएँ एवं बाएँ भाग में सेवा तथा करुणा की सरिता प्रवाहमान थी। उनके प्रदीप्त आभा मंडल से निकलने वाली दिव्य रश्मियों के दर्शन मात्र से ही न जाने कितने-कितने को समाधान मिल जाता था। धर्मनेता, राजनेता, उद्योगपति गृहपति, मजदूर, किसान, विद्यार्थी, व्यवसायी, दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजशास्त्री सबने आपके चिंतन, दर्शन एवं दृष्टिकोण से कोई न कोई मार्गदर्शन जरूर प्राप्त किया।

अवधेशानंद गिरी ने लिखा–‘युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ दार्शनीय ही नहीं अपितु अत्यंत महनीय भी थे। ऐसा लगा मानो भगवता धरा पर अविर्भूत हुई है।

अटल विहारी वाजपेयी–आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साहित्य के अच्छे पाठक थे उन्होंने कहा–‘मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञ को साहित्य का लोहा मानता हूँ।’

ध्यान की प्राचीन परंपरा जो प्रायः विलुप्त हो गई थी, उसे पुनः जीवित करने का श्रेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को जाता है। आपने प्रेक्षाध्यान का एक सूत्र दिया–‘संपिक्खए अप्पगमप्पएणं’ उस सूत्र के द्वारा आत्मा की संप्रेक्षा करना। यह सूत्र न जाने कितनों के जीवन में उजास भर रहा है। महाप्रज्ञ की प्रज्ञा की परिक्रमा करना प्रज्ञा की अनेकों अनेक रश्मियों का साक्षात्कार करना है। महाप्रज्ञ का जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज था। एक विरल व्यक्तित्व आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन को शब्दों में पिरोना बड़ा कठिन कार्य है। उनके जीवन की एक रश्मि को छुना भी कठिनतर है। न जाने कितने अनगिन व्यक्तियों को आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपने कृपा प्रसाद का आश्रय दिया होगा। डुबते को उबारा होगा। इस कलाकार की छैनी के अद्भुत कौशल ने कितने अनगढ़ पत्थर को तरासा है। वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी जो उन तरासे हुए पत्थर में निकली एक कृति है जो आज अहर्निश संघ में साध्वी समाज को सेवा प्रदान कर रही है। और प्रमुखा पद को सुशोभित कर रहे हैं। मुझे भी उस महायोगी! के करकमलों से सपरिवार (मुनि अजय प्रकाश जी, साध्वी नीतिप्रभा जी, साध्वी तन्मयप्रभा जी) दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की स्नेहिल दृष्टि हमारे आध्यात्म विकास के प्राणों में ऊर्जा का संचार कर रही है। अंतर्दृष्टि को जगाने का सतत प्रयास करते रहें। भीतर का प्रकाश जगाएँ। गुरु कृपा से ऐसे वर का वरण करें।

महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व जग में निराला था।
महाप्रज्ञ का कर्तृत्व जग में उजियाला था।
सोई चेतना को जगाने वाले पेगाम्बर।
महाप्रज्ञ प्रज्ञा का अमृत प्याला था।।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट २०२२ के विजेताओं का सम्मान समारोह

गुवाहाटी।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी, राजसमंद द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट २०२२ के राष्ट्रीय एवं असम राज्य स्तर के विजेताओं का सम्मान कार्यक्रम स्थानीय साउथ प्वाइंट स्कूल में अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। स्कूल के प्राध्यापक कृष्णांजन चंदा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के अध्यक्ष बजरंग लाल डोसी ने अपने वक्तव्य में स्कूल को प्रतियोगिता करने के लिए धन्यवाद दिया।

अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बजरंग बैद ने अणुव्रत के विषय में जानकारी दी। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के राष्ट्रीय सह-संयोजक एवं ईस्ट जोन प्रभारी संजय चोरड़िया ने कॉन्टेस्ट के बारे में जानकारी दी। स्कूल से ३३ विद्यार्थियों ने गायन, निबंध, भाषण, चित्रकला प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस प्रतियोगिता से असम राज्य स्तर पर १० विजेता रहे। स्कूल से राष्ट्रीय स्तर पर दो विद्यार्थियों ने स्थान प्राप्त किया, जिसमें निबंध प्रतियोगिता (कक्षा ६-८) में पहला स्थान योहेंबी चानु तथा चित्रकला (कक्षा ९-१२) में तृतीय स्थान जूमोन ठाकुरिया ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को अणुविभा की ओर से पुरस्कार, मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र दिए गए। स्कूल के प्राध्यापक कृष्णांजन चंदा एवं डायरेक्टर मंदिरा चंदा का अभिनंदन मोमेंटो व अणुव्रत पट्ट से किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कॉन्टेस्ट की स्कूल प्रभारी पांचाली सान्याल ने किया। इस अवसर पर अणुविभा के असम राज्य प्रभारी छत्तर सिंह चोरड़िया, अणुव्रत समिति गुवाहाटी के उपाध्यक्ष नवरतन गधैया, मंत्री अशोक बोरड़, संगठन मंत्री प्रेमलता बैद, प्रचार-प्रसार मंत्री संतोष काबरा, कार्यकारिणी सदस्य अशोक मालू, संपत मिश्रा, निर्मल बैद उपस्थित थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०४वें जन्मोत्सव पर

मुक्तक

● मुनि कमल कुमार ●

एक सो चारवें जन्मोत्सव की बेला आई है।
जन-जन के मानस में अभिनव खुशियाँ छाई है।
युगों-युगों तक याद करेगी जनता महाप्रज्ञ को।
आपके सुयश की बज रही सर्वत्र शहनाई है।।

कालू गुरु कर दीक्षित सतत तुलसी गुरु का साया था।
नथमल से सुश्रम कर तुलसी गुरु ने महाप्रज्ञ बनाया था।
सुदूर प्रांतों की पैदल यात्रा करके अनेक लोगों को।
अहिंसा सत्य मैत्री एकता का सबको पाठ पढ़ाया था।।

आचार्य महाप्रज्ञ सचमुच प्रज्ञा के भंडार थे।
जिज्ञासाओं के समाधान हित सक्षम आधार थे।
हम उन्हें तेरापंथ के दशवें अधिशास्ता कहते हैं।
परंतु वे एक संत रूप में सचमुच अवतार थे।।

महाप्रज्ञ जी का जीवन स्वच्छ दर्पण था।
अपने गुरु और लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण था।
इसीलिए ही वे प्रज्ञा के अखूट भंडार कहलाए।
ज्ञान ध्यान से परिपूर्ण उनका प्रत्येक क्षण था।।

उनके प्रवचन के हर शब्द में सच्चाई थी।
साधना की गहराई से ही ऐसी प्रज्ञा पाई थी।
शरणागतों को सन्मार्ग दिखाने में तत्पर रहते।
उन्होंने केवल अपनी ही नहीं मानवता की शान बढ़ाई थी।।

अर्हम

● मुनि अमन कुमार ●

जन्म दिवस गुरुवर का आया,
जन-जन के मन हर्ष सवाया,
तुलसी गुरु का प्रतिपल साया,
देख योग्यता शिखर चढ़ाया।।

प्रभुवर थे गुण के भंडार,
महावीर के थे अवतार,
किया था जन-जन का उद्धार,
महिमा उनकी अपरंपार।।

प्रेक्षाध्यान है देन तुम्हारी,
मिटती इससे सकल बीमारी,
पल-पल आत्मा से इकतारी,
बार-बार जाता बलिहारी।।

माँ बालू के नंदन प्यारे,
चौरड़िया कुल के उजियारे,
भिक्षु गण के थे ध्रुव तारे,
लाखों जन के नयन सितारे।।

प्रवचन शैली बड़ी विलक्षण,
श्रोता सुन ही जाता धन-धन,
श्रम बूँदों से सींचा ये गण,
चरण कमल में करता वंदन।।

माता सह दीक्षा है पाई,
दिल की कली-कली विकसाई,
सन्निधि प्रभु की थी सुखदाई,
कालू गुरु मन छाप जमाई,
तुलसी गुरु मन छाप जमाई।।

✦ *सत्य लगने वाली बात को भी शांति के साथ प्रस्तुत करो। आवेश अपने आपमें असत्य ही है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

'अटूट बंधन माँ-बेटी का' कार्यशाला का आयोजन

तिलक नगर, जयपुर।

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अभातेमम द्वारा निर्देशित तेमम द्वारा 'अटूट बंधन माँ-बेटी का' कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि माता धरती की तरह होती है, वह सृजन करती है, सबको अपनी ममता द्वारा सुकून बाँटती है। अपनी संतान के प्रति निःस्वार्थ भाव से सब कुछ न्योछार करने को तैयार रहती है। साध्वीश्री जी ने कहा कि माँ का पहला कर्तव्य है अपनी पुत्री को सुसंस्कारित बनाए, क्योंकि एक बेटी आगे चलकर पूरे परिवार को और पीढ़ियों को संस्कारी बना सकती है।

तेमम, जयपुर शहर अध्यक्ष निर्मला सुराणा, अभातेमम ट्रस्टी विमला दुगड़ व दीप्ति धांधिया ने अपनी पुत्रियों के अनुभवों को प्रस्तुत किया। कांति सिंघी, गरिमा सुराणा व राजस्वी सुराणा ने अपनी माँ के मधुर संस्मरण प्रस्तुत किए। नीलिमा व शनाया बैद ने माता-पुत्री के ममतामयी संबंध को नृत्य के द्वारा प्रस्तुत किया।

अंत में सर्वश्रेष्ठ कोलाज व रोचक खेल प्रतियोगिताओं द्वारा माँ-बेटी के आपसी सहयोग व समझ का अंकन किया गया। विजेताओं को मेडल व उपहार से पुरस्कृत किया गया। मंच संचालन चंचल दुगड़ ने किया।

'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तेमम द्वारा 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला के छठे चरण का आयोजन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने सभी का स्वागत किया।

योग एवं प्रेक्षा प्रशिक्षिका डॉ० अनीता जैन ने महाप्राण ध्वनि के एवं हमेशा प्रसन्न रहने के लाभ बताए। डॉ० अनीता जैन ने 'हेल्दी फूड हैबिट्स एंड अवॉइड जंक फूड' विषय पर विस्तार से बताया। निवर्तमान अध्यक्षा विमला बैद ने माता-पिता की आज्ञा का पालन विषय पर एक कहानी के माध्यम से बच्चों को बताया।

संगठन मंत्री दिलकुश तातेड़ ने धाय मा पन्ना के जीवन के प्रेरक प्रसंग बच्चों के साथ शेयर किए। प्रधानाचार्य एवं अध्यापिका ने महिला मंडल को आभार प्रेषित किया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री चंद्रा जीरावला ने किया।

माँ-बेटी कार्यशाला का आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने माँ-बेटी का अटूट बंधन कार्यशाला का आयोजन उत्तर हावड़ा तेरापंथ भवन में किया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि माँ घर की शान है। माँ पाठशाला है। माँ की महिमा अद्भुत है। जिस घर में संस्कारी माँ होती है वह घर स्वर्ग होता है। बेटी घर का चिराग है। त्याग की प्रतिमूर्ति है। बेटियाँ स्वप्न का तिलिस्म है। बेटियाँ मानव मन का अंतर मन है, बेटियाँ पिता की झोली में कुदरत का वरदान है।

मुनिश्री ने माँ-बेटियों को धर्म, ध्यान व सत्कार्यों से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल के गीत से हुआ। इस अवसर पर महिला मंडल की कार्यकारी अध्यक्षा अलका सुराणा, संरक्षिका सुमन बैद ने वक्तव्य, गरिमा सेठिया, साक्षी भंसाली, प्रियंका छल्लानी आदि ने अपने विचार रखे। कन्या मंडल की प्रभारी बबीता कोठारी ने आभार व संचालन दिव्या नाहटा ने किया।

अनुशासन कार्यशाला आयोजित

ईरोड।

तेमम द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित अनुशासन कार्यशाला का आयोजन साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में हुआ। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि विकास के अनेक मापदंड हैं, उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण है—अनुशासन।

अनुशासन शरीर के रीढ़ के समान है। यह पाँच अक्षरीय गाड़ी है, दूसरों के कहे अनुसार चलना और अपने मन से कुछ नहीं करना ही अनुशासन है। अनुशासनहीन जीवन विकास का सबसे बड़ा बाधक तत्त्व है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि अनुशासन का अर्थ है अपने अस्तित्व का समर्पण। जहाँ समर्पण है वह विकास है। अति स्वतंत्रता स्वच्छंदता को जन्म देता है, वर्तमान में कोई किसी के अनुशासन में रहना नहीं चाहता है। कोई एक-दूसरे को सहन करना नहीं चाहता है। साध्वी दक्षप्रभा जी ने मधुर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मेरुप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल उपाध्यक्ष मंजु बोथरा द्वारा स्वागत भाषण एवं महिला मंडल मंत्री पिंकी वैदमुथा द्वारा आभार ज्ञापन व्यक्त किया।

अटूट बंधन माँ-बेटी का कार्यशाला

कालू।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम कालू के तत्त्वावधान में कन्या मंडल कालू द्वारा मदर्स डे पर साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के सान्निध्य में अटूट बंधन माँ-बेटी का कार्यशाला रखी गई।

साध्वी उज्ज्वलरेखा जी ने कहा कि माँ-बेटी का रिश्ता हर रिश्ते से प्यारा होता है। माँ बच्चा जब से गर्भ में आता है तब से उसको प्यार देना शुरू कर देती है। माँ खुद गीले में सोती है पर अपने बच्चे को गीले में नहीं सोने देती है। बेटियाँ अपने दोनों कुल की माँ का सम्मान करें। माँ के हर कार्य को बेटियाँ सहजता से करें। कहानी के माध्यम से बताया कि माँ का मन कितना कोमल और प्यार से भरा होता है। माँ बच्चे की हर इच्छा को पूरा करती है। बच्चे भी अपनी माँ की इच्छा को पूरा करने का प्रयास करें।

कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से की गई। कन्या मंडल द्वारा आयोजित फोटो कॉलाज प्रतियोगिता में निर्णायक कल्पना सांड के निर्णय अनुसार प्रथम स्थान जूली नाहटा, दूसरा स्थान वर्षा सांड, तृतीय स्थान ऋतु सांड ने प्राप्त किया। महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा सांड, मंत्री रेणु बोथरा, उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, कोषाध्यक्ष चंद्रकला दुगड़, कन्या मंडल संयोजिका हर्षा सांड, सह-संयोजिका भूमिका सांड, जूली नाहटा, कांता सांड ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन हर्षा सांड ने किया।

जैन धर्म का सामान्य बोध विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेमम के तत्त्वावधान में जैन धर्म का सामान्य बोध विषय पर तेरापंथ भवन में उद्बोधन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आत्म साधना के चार सूत्र हैं—सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन-सम्यग् चारित्र, सम्यग् तप। जो श्रावक हैं, उसको कम से कम ६ तत्त्व ६ काया का ज्ञान होना जरूरी है। इनके ज्ञान से आत्मा का उत्कर्ष होता है। भगवान महावीर के सिद्धांतों में हमारा विश्वास है इसीलिए हम जैन हैं।

जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रति आस्था रखनी चाहिए। देव, गुरु, धर्म के महत्त्व को समझना व श्रद्धा उसमें रखनी चाहिए। गुरु के बिना ज्ञान कौन देगा। गुरु ही समस्या का समाधान कर सकते हैं। प्राण चले जाएँ, लेकिन प्रण नहीं जानी चाहिए। आपकी आस्था मजबूत है। श्रद्धा में जान है तो भगवान आपसे दूर नहीं है। ज्ञान, दर्शन के साथ चारित्र की भी आराधना करनी चाहिए। आगार धर्म अणगार धर्म की साधना करनी चाहिए। मुनिश्री ने जिज्ञासाओं का समाधान भी दिया।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि जैन धर्म में तीन रत्न बताए हैं। उसमें एक रत्न है—चारित्र। जैन धर्म आचार प्रधान धर्म है। आचार की छोटी-छोटी बातों को जानना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के गीत से हुआ। संचालन तेरापंथ महिला मंडल की कार्यकारी अध्यक्षा अल्का सुराणा ने किया।

विकास का द्वार खोलता है अनुशासन

किशनगंज।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में महिला मंडल, किशनगंज द्वारा अनुशासन की शक्ति कार्यशाला आयोजित हुई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि तेमम द्वारा समय-समय पर अनेक कार्यक्रम, कार्यशाला आयोजित होती है। सभी चाहते हैं कि हमारे परिवार में, समाज में अनुशासन रहना चाहिए। जहाँ अनुशासन है, वहाँ सुख, शांति, सौंदर्य रहता है। सत्यं, शिवं, सुंदरम् अनुशासन, मर्यादा, व्यवस्था से घटित हो जाता है। जहाँ अनुशासन नहीं है, वहाँ न व्यवस्था न विकास होता है। यह कार्यशाला सबके लिए उपयोगी बने। वर्तमान पीढ़ी के लिए ज्यादा उपयोगी जिससे उसका भविष्य सुरक्षित रह सकेगा, समाज और विकासशील होगा।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासन मर्यादा, व्यवस्था हमारे विकास का आधार है। अनुशासन बंधन नहीं मुक्ति का द्वार है। भगवान महावीर स्वामी ने संघ में सात पदों की व्यवस्था की जिसमें संघ का सम्यक् संचालन हो सके। आचार्य भिक्षु ने संविधान का निर्माण किया, जिसका परिणाम यह कि आज तेरापंथ धर्मसंघ विकास की ओर गतिमान है।

अनुशासन हमारे मनोबल-आत्मबल को बढ़ाने का रास्ता है। प्रकृति एवं व्यक्ति ने जब-जब भी मर्यादा तोड़ी है, तो विनाश ही हुआ है। समाज की कानून व्यवस्था अपराध को रोकती है। व्यक्ति एवं परिवार, संस्था, समाज का अनुशासन सौहार्द, समन्वय एवं विकास का हेतु बनता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। विषय प्रस्तुति महिला मंडल अध्यक्षा संतोष दुगड़ ने दी। आभार ज्ञापन महिला मंडल, उपाध्यक्ष प्रभा बैद ने किया। कार्यशाला का संचालन मंत्री रचना बोथरा ने किया।

पाँच दिवसीय ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

जसोल।

सिवांची मालाणी तेरापंथ क्षेत्रीय संस्थान के तत्त्वावधान में जोधपुर संभाग स्तरीय पाँच दिवसीय ज्ञानशाला ज्ञानार्थी संस्कार निर्माण शिविर तेरापंथ भवन में मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में शिविर प्रायोजक बाबूलाल सिंघवी आतिथ्य में संस्थान के अध्यक्ष डूंगरचंद की अध्यक्षता में शिविर का शुभारंभ किया गया।

इस पाँच दिवसीय चलने वाले शिविर में विभिन्न विषय पर क्लासों का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मंत्री ललित श्रीश्रीमाल ने किया। शिविर संयोजक संपतराज चोपड़ा ने बताया कि शिविर में करीब १० कस्बों, गाँवों से २६५ ज्ञानार्थी भाग ले रहे हैं। प्रायोजक परिवार सुखराज बाबूलाल त्रिभुवन कुमार, सिंधवी परिवार हैं। आभार ज्ञापित संस्था के पूर्व धनराज ओस्तवाल ने किया।

कार्यक्रम में महसभा के गौतमचंद सालेचा, बाहुबली भंसाली, संस्थान के उपाध्यक्ष अरविंद भंडारी, मदन सालेचा बोस, कोषाध्यक्ष बाबूलाल छाजेड़, सहमंत्री प्रवीण संकलेचा, निवर्तमान अध्यक्ष नेमीचंद चोपड़ा आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

अर्थ का अर्जन शुद्ध साधन से होना चाहिए

दिल्ली।

अर्थ का अर्जन शुद्ध साधन से होना चाहिए। अर्जित धन का उपयोग भी सम्यक् रूप से त्याग की भावना के साथ होना चाहिए। ये विचार शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने अणुव्रत भवन में आयोजित 'पारिवारिक व्यापार की विरासत' विषय पर विशेष कार्यक्रम से पूर्व आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी ने भी भारतीय संस्कृति में अर्थ के मर्यादित अर्जन और उपयोग की सार्थकता पर प्रकाश डाला। तेरापंथ सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता विशेषज्ञ राकेश शर्मा ने विस्तार से उत्तराधिकार के बारे में बताते हुए संस्कार निरूपण को उत्तराधिकार में देने की बात कही। संचालन अंतर्राष्ट्रीय कवि राजेश चेतन ने किया। कार्यक्रम के संयोजक लक्ष्मीपत बोथरा, दीपक जैन व सुशील राखेचा थे।

आभार ज्ञापन अग्रवाल मित्र परिषद् के अध्यक्ष संजय जैन ने किया। तेरापंथी सभा, दिल्ली अग्रवाल मित्र परिषद् तथा अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस विचार सम्मेलन में समाजभूषण मांगीलाल सेठिया, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शांतिकुमार जैन, बजरंग बोथरा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का शुभारंभ

बेहाला, कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन बेहाला तेरापंथी सभा द्वारा जेम्स एकेडमिक इंटरनेशनल स्कूल में किया गया। संस्कार निर्माण शिविर के प्रथम दिवस शुभारंभ समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महासभा के मुख्य न्यासी सुरेश गोयल, जेम्स ऐकेडमिक के सीईओ प्रकाश भूतोड़िया, प्रिंसिपल अनिल अरोडा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर बंगाल व उड़ीसा से लगभग १७५ बालक संभागी बन रहे हैं।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन निर्माण में संस्कार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है, जिस प्रकार नींव के बिना इमारत टिक नहीं सकती, उसी प्रकार संस्कारों के बिना जीवन का निर्माण नहीं हो सकता। संस्कार का अर्थ है—शुद्धि परिष्कार। संस्कार शुद्धता की ओर ले जाने वाला होता है। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, बेहाला के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण बेहाला तेरापंथी सभा, अध्यक्ष जसयिंह धारीवाल ने दिया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। शिविर में उपासक सुरेंद्र सेठिया, उपासक गौतम वेदमुथा, उपासक सुधांश जैन, उपासक रवि छाजेड़ आदि प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

आध्यात्मिक अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, दक्षिण हावड़ा के तत्त्वावधान में गंगेज स्काई में आध्यात्मिक अनुष्ठान का कार्यक्रम हुआ। मुनि जिनेश कुमार जी ने मंत्र जप अनुष्ठान कराया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि हमारे जीवन तंत्र को संचालित करने वाला तत्त्व है भावों का शुद्धि। धर्म तत्त्व को अनेक प्रक्रियाओं से साधा जा सकता है, उसमें एक महत्त्वपूर्ण उपाय है—मंत्र साधना।

नमस्कार महामंत्र से व्यक्ति की नहीं गुणों की पूजा होती है, नमस्कार महामंत्र से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय महामंत्र व साधु को वंदना की गई है। नमस्कार महामंत्र के प्रभाव से अनेक भव्य आत्माएँ संसार सागर में तिर गई हैं।

मुनिश्री ने विविध मंत्रों का उच्चारण करवाया। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। स्वागत भाषण संदीप हीरावत ने दिया। स्वागत गीत गंगेज स्काई की महिलाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संचालन संगीता गिडिया ने किया।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✻ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

मोनिका चोपड़ा के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

गंगाशहर।

इंद्रचंद-राजा देवी छाजेड़ के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कारक राजेश छाजेड़, पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। मंलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अहमदाबाद।

नवरतनमल सिंघवी के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक प्रकाश धींग व विकास पितलिया ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

संस्कारकों द्वारा मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। परिवार की ओर से संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

गंगाशहर।

पटना प्रवासी, गंगाशहर निवासी जतनलाल-नीलम देवी बोथरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, पवन छाजेड़, विनीत बोथरा और देवेंद्र डागा ने संपन्न करवाया।

संस्कारकों ने परिवार को बधाई प्रेषित की।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

मुंबई।

श्रीचंद सोनी और जगदीश सोलंकी के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन परमार ने मांगलिक मंत्रोच्चार के शुभारंभ विधि संपादित करवाई।

तेयुप की ओर से संस्कारक द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। जगदीश सोलंकी ने आभार ज्ञापित किया।

नूतन शिलान्यास

गंगाशहर।

लुणकरण सेठिया के पुत्र-पुत्रवधु नवरतन-जयश्री सेठिया के नूतन व्यावसायिक हेतु भूमि के शिलान्यास का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक देवेंद्र डागा और भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

इस अवसर पर परिवार के सदस्य एवं समाज के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

विवाह संस्कार

जयपुर।

अंजु देवी-संजय दुधेड़िया की सुपुत्री चेतना दुधेड़िया का विवाह संस्कार चंदा देवी-महेंद्र बैंगानी के सुपुत्र अनंत बैंगानी के साथ संस्कारक राजेंद्र बांठिया, श्रेयांस बैंगानी व सौरभ जैन ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर विवाह की सभी रश्में संपन्न करवाई।

कार्यक्रम में अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। दोनों परिवारों को परिषद परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

मनोनुशासनम्

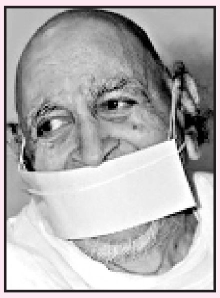

❑ आचार्य तुलसी ❑

हमारा जगत् संक्रमणशील है। इसमें वस्तु एक देश से दूसरे देश में संक्रांत होती है और उससे दूसरे द्रव्य प्रभावित होते हैं। सौर जगत् से जो परमाणु प्रवाह आता है, उससे मनुष्य प्रभावित होता है। देश और काल ये दोनों माध्यम उसके प्रभावित होने में योग देते हैं। जैसे विभिन्न महीनों में आने वाला और जगत् का प्रवाह मनुष्य के विभिन्न अंगों को प्रभावित करता है, वैसे ही विभिन्न दिशाओं से आने वाला सौर प्रवाह भी मनुष्य के विभिन्न अंगों और चैतन्य केंद्रों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालता है। ध्यान के लिए पूर्व और उत्तर दिशा से आने वाले सौर जगत् के तत्त्व-प्रवाह अधिक अनुकूल होते हैं। इसीलिए ध्याता को पूर्व और उत्तर दिशा की ओर मुँह कर ध्यान करने का निर्देश दिया गया है।

खड़े होकर ध्यान करना कठिन कार्य है। बैठकर ध्यान करना उससे सरल है। इसमें शारीरिक तनाव का विसर्जन अधिक सरलता से किया जा सकता है। बैठकर किए जाने वाले पद्मासन आदि अनेक आसन हैं। वे सभी आसन ध्यान के लिए विहित हैं। किंतु वैसे आसनों में ध्यान करना विहित नहीं है जो शरीर के लिए कष्टकर हों। इस विषय में कुछ आचार्यों का चिंतन बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने लिखा है कि वर्तमान में शरीर का संहनन बहुत दृढ़ नहीं है। इसलिए ध्यान के लिए पद्मासन और कायोत्सर्गासन—इन दो ही आसनों का प्रयोग करना चाहिए। यह कोई नियम नहीं है किंतु वर्तमान की स्थिति का विवेक है।

ध्यान सोकर भी किया जा सकता है। उसका व्यवहार सामान्यतः प्रचलित नहीं है किंतु सोकर ध्यान न करना, ऐसा नियम भी नहीं है। अभ्यासकाल में आसन आदि पर अधिक ध्यान देना आवश्यक होता है। अभ्यास के परिपक्व होने पर चाहे जिस मुद्रा या आसन में ध्यान किया जा सकता है।

(७) ग्रामागार-शून्यगृह-श्मशान-गुहोएवन-पर्वत-तरुमूल-पुलिनानि ध्यानस्थलानि।।
(८) भूपीठ-शिलाकाष्ठपट्टान्युपवेशनस्थानानि।।

(७) गाँव, घर, शून्यगृह, श्मशान, गुफा, उपवन, पर्वत, वृक्षमूल, नदी का पार्श्व भाग आदि ध्यान करने के लिए उपयुक्त स्थल हैं।
(८) भूपीठ, शिलापट्ट—ये बैठने के लिए उपयुक्त आसन हैं। ध्यान के आसन पहले बताए जा चुके हैं।

ध्यान-स्थल

ध्यान कहाँ किया जाए? इस प्रश्न का भी अपने आपमें महत्त्व है। वस्तु का जैसे महत्त्व होता है, वैसे ही उसके क्षेत्र (आधारस्थल) का भी महत्त्व होता है। ध्यान के लिए सर्वाधिक समुचित क्षेत्र वही है, जहाँ कोलाहल न हो। एकाग्र होने में बाधा डालने वाली कोई भी वस्तु न हो। शून्यगृह, श्मशान आदि स्थलों का चुनाव इसी दृष्टि से किया गया है। किंतु ध्यान एकांत स्थलों में ही किया जाए, यह अनिवार्य नहीं है। वह गाँव, जनाकुल घर में भी किया जा सकता है। उपवन आदि का चुनाव इसलिए किया गया कि उसमें पर्याप्त प्राणवायु प्राप्त हो सके।

स्थल के संबंध में कोई निश्चित रेखा नहीं खींची जा सकती, किंतु इस विषय में इतना ही निर्देश किया जा सकता है कि वह स्वच्छ, नीरव, प्रशस्त और प्राणवायु से परिपूर्ण होना चाहिए। स्थल के विषय में एक विशेष बात ध्यान देने योग्य है। वह यह है कि ध्यान एक निश्चित स्थान में किया जाए तो उसकी सिद्धि शीघ्र होती है।

दूसरी बात यह है कि विचार संक्रमणशील होते हैं। एक मनुष्य के विचारों का दूसरे मनुष्य के विचारों पर असर होता है। बुरे विचारों का संक्रमण न हो, इस दृष्टि से ध्यान-स्थल का एकांत होना आवश्यक है।

ध्यानोचित आसन

ध्यानकाल में बैठने के आसनों का भी बहुत महत्त्व है। मृत्तिका, शिलाखंड और काष्ठ—ये शरीर के तापमान को संतुलित और स्थिर बनाए रखते हैं और विजातीय तत्त्वों के प्रभाव से बचाते हैं, इसलिए इनका विशेष महत्त्व है। सात्विक वस्त्रासन भी ध्यानकाल में उपयोग में लाए जाते हैं।

(६) सालम्बन-निरालम्बनभेदाद् ध्यानं द्विधा।।
(१०) पिंडस्थ-पदस्थ-रूपस्थ-रूपातीतभेदादाद्यं चतुर्धा।।
(११) शारीरालम्बि पिंडस्थम्।।
(१२) शिरो-भ्रू-तालु-ललाट-मुख-नयन-श्रवण-नासाग्र-हृदय-नाभ्यादि शारीरालम्बनानि।।
(१३) धारणालम्बनं च।।
(१४) प्रेक्षा वा।।
(१५) ध्येये चित्तस्य स्थिरबंधो धारणा।
(१६) पार्थिवी-आग्नेयी-मारुती-वारुणीति चतुर्धा।।
(१७) स्वाधारभूतानां स्थानानां वृहदाकारस्य वैशद्यस्य च विमर्शः।।
(१८) तत्रस्थस्य निजात्मनः सर्वसामर्थ्योद्भावनं पार्थिवी।।
(१६) नाभिकमलस्य प्रज्वलनेन अशेषदोषदाहचिन्तनमाग्नेयी।।
(२०) दग्धमलापनयनाय चिंतनं मारुती।।
(२१) महामेघेन तद्भस्मप्रक्षालनाय चिंतनं वारुणी।।
(२२) श्रौतालंबि पदस्थम्।।
(२३) संस्थानालंबि रूपस्थम्।।
(२४) सर्वमलापगतज्योतिर्मयात्मालंबि रूपातीतम्।।
(२५) तन्मयत्वमेवास्य स्वाध्यायाद् वैलक्षण्यम्।।
(६) ध्यान के दो प्रकार हैं—

(१) सालम्बन—आलम्बन-सहित।
(२) निरालम्बन—आलंबन-रहित।

(१०) सालम्बन ध्यान के चार प्रकार हैं—(१) पिंडस्थ, (२) पदस्थ, (३) रूपस्थ, (४) रूपातीत।
(११) जिस ध्यान में शरीर के किसी अवयव का आलंबन लिया जाता है, वह पिंडस्थ कहलाता है।
(१२) सिर, भ्रू, तालु, ललाट, मुँह, नेत्र, कान, नासाग्र, हृदय और नाभि—ये शारीरिक आलंबन हैं।
(१३) धारणा का आलंबन लेने वाले ध्यान को भी पिंडस्थ कहा जाता है।
(१४) स्थूल और सूक्ष्म शरीर की संवेदनाओं और क्रियाओं तथा मानसिक वृत्तियों के दर्शन के अभ्यास को प्रेक्षा कहा जाता है। यह भी एक प्रकार का पिंडस्थ ध्यान है।
(१५) चित्त को किसी एक देश में सन्निविष्ट करने को धारण कहा जाता है।
(१६) धारण के चार प्रकार हैं—(१) पार्थिवी, (२) आग्नेयी, (३) मारुती, (४) वारुणी।
(१७) आसनस्थित होकर मेरे आधारभूत स्थान (समुद्र, पर्वत आदि) विशाल और विशद हैं—ऐसा अनुभव करना चाहिए।
(१८) फिर उन पर अपने को स्थिर मानकर अपने सर्वशक्ति-संपन्न वीतराग स्वरूप की अनुभूति करनी चाहिए। अनुभूति को पुष्ट करते-करते चित्त उसी में विलीन हो जाना चाहिए। यह पार्थिवी धारणा है।
(१६) नाभिकमल प्रज्वलित होने के कारण सब दोष दग्ध हो रहे हैं—इस अनुभूति को आग्नेय धारण कहा जाता है।

नाभिकमल स्थित त्रिकोण अग्निकुंड में अग्नि प्रज्वलित हो रही है, उससे सारे दोष भस्म हो रहे हैं—ऐसी धारणा करते-करते चित्त उसमें लीन हो जाना चाहिए।

(२०) नाभिकमल में दोषों के चलने से जो भस्म होती है, उसे तेज वायु का झोंका उड़ाकर ले जा रहा है—ऐसा चिंतन करना मारुती धारणा है।
(२१) शेष भस्म का प्रक्षालन करने के लिए विशाल मेघराशि की अनुभूति करने को वारुणी धारणा कहा जाता है।
(२२) ॐ, ह्रीं, र्हं, णमो अरहंताणं, अ सि आ उ सा आदि शब्द-मंत्रों, श्रुत (शब्दों या नामों) का आलंबन ले जो ध्यान किया जाता है, उसे पदस्थ ध्यान कहा जाता है।
(२३) जिस ध्यान में संस्थान (आकृति विशेष) का आलंबन लिया जाता है, वह रूपस्थ ध्यान कहलाता है।
(२४) सर्वमलातीत ज्योतिर्मय आत्मा के अमूर्त स्वरूप का आलंबन लेने को रूपातीत ध्यान कहा जाता है।
(२५) ध्यान के प्रारंभ में स्वाध्याय होता है, चिंतन होता है, फिर भी ध्यान और स्वाध्याय एक नहीं है। स्वाध्याय में विषय की तन्मयता नहीं होती, समरसीभाव नहीं होता। ध्यान में तन्मयता होती है, समरसीभाव होता है। ध्यान करने वाला चिंतन करते-करते उसमें लीन हो जाता है, तन्मय हो जाता है। यह तन्मयता या लय ही ध्यान है। इस दशा में ध्येय और ध्याता में अभेद हो जाता है। परमात्मा के ज्योतिर्मय या आनंदमय स्वरूप में लीन होकर ध्याता स्वयं वैसा बन जाता है।

ध्यान के प्रकार

ध्यान शब्द की कल्पना करते ही हमारे सामने दो स्थितियाँ उभर आती हैं—(१) मन की एकाग्रता, (२) मन की निरोध।

एकाग्रता निर्विषय नहीं होती। वह किसी वस्तु या अवस्था पर निर्भर होती है। एकाग्रता की तुलना उस बच्चे से की जा सकती है जो माता की अंगुली के सहारे चलने का अभ्यास करता है। निरोध की तुलना उस किशोर से हो सकती है। जो अपने पैरों के बल चलने लग जाता है। पहले कोई परिकल्पना की जाती है, फिर उस पर मन को स्थिर किया जाता है, यह एकाग्रता है। इसमें मन की स्थिरता लक्ष्य के सहारे होती है, इसलिए इस एकाग्रतात्मक धर्म को सालम्बन ध्यान कहा जाता है।

मन का निरोध विषय-शून्यता की स्थिति में होती है। जब मन खाली हो जाता है, उसके सामने कोई खाली विषय नहीं रहता तब वह अपने आप निरुद्ध हो जाता है। जब मन में कोई कल्पना नहीं होती तब उसके सामने कोई शब्द नहीं होता, कोई आकार नहीं होता। शब्द और रूप के अभाव में वह निरालंबन हो जाता है और निरालंबन होने का अर्थ है कि उसकी गतिशीलता समाप्त हो जाती है। यही निरालंबन ध्यान है।

(क्रमशः)

संबोधि

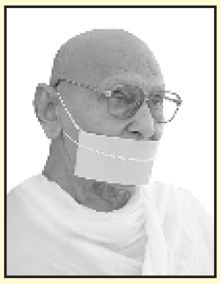

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(६) **शोधिः ऋजुकभूतस्य, धर्मः शुद्धस्य निष्ठति।**
निर्वाणं परम याति, धृतसिक्त इवानलः।।

साधक दुःख के कारणों और उनकी मुक्ति के मार्ग की खोज में जुट पड़ता है। तब उसे सत्य का बोध होता है और वह अपने लक्ष्य का निर्णय कर लेता है। यहाँ से सत्य की शोध, जिससे दुर्गति का अंत हो, का प्रारंभ होता है। यही दर्शन का आदि-बिंदु है। जैन दर्शन यहाँ से प्रारंभ होता है और निर्वाण प्राप्ति में कृतकार्य हो जाता है।

राजा मिलिन्द ने स्थविर नागसेन से पूछा—'प्रव्रज्या का क्या उद्देश्य है?' नागसेन ने कहा—'प्रव्रज्या का उद्देश्य है—दुःख मुक्ति और निर्वाण-प्राप्ति'। राजा ने पूछा—'क्या आपने इसीलिए प्रव्रज्या ली थी?' नागसेन ने कहा—'नहीं। मैंने बौद्ध भिक्षुओं में बड़ा पांडित्य देखा। मैंने सोचा, मुझे भी सीखने को मिलेगा। सीखने के बाद मैंने जाना कि प्रव्रज्या का उद्देश्य क्या है।'

चार प्रकार के पुरुष होते हैं—

कुछ व्यक्ति दुःख-क्षय के लिए प्रव्रजित होते हैं और वे उसी ध्येय पर चलते हैं। कुछ व्यक्ति प्रव्रज्या के उद्देश्य को बाद में समझते हैं, किंतु तदनुरूप अभ्यास नहीं करते। कुछ जानते हैं और अभ्यास भी करते हैं। कुछ न जानते हैं और न तथानुरूप आचरण करते हैं।

एक व्यक्ति ने आचार्य महाप्रज्ञ को पूछा—'प्रव्रज्या का प्रयोजन क्या है? आपने प्रव्रज्या क्यों ली?' उन्होंने कहा—

अज्ञातं ज्ञातुमिच्छामि, गूढं कर्त्तुमनावृतम्।
अभूतो हि बुभूषामि, सेयं दीक्षा मर्माहती।।

मेरे प्रव्रज्या ग्रहण करने के मुख्य प्रयोजन तीन हैं—

(१) अज्ञात को ज्ञात करना। (२) आवृत को अनावृत करना। (३) जो नहीं हो सके वैसा होना—जो रूपांतरण आज तक घटित नहीं हो सका वैसा रूपांतरण घटित करना।

ध्येय का स्पष्ट चुनाव प्रथम क्षण में बहुत कम व्यक्ति ही कर पाते हैं। उनमें से बहुत कम व्यक्ति ही उसी दिशा में गतिमान रह सकते हैं। जिनका मोहावरण कुछ क्षीण हो, विशद बोध हो, वे ही व्यक्ति दुःख-मुक्ति के लिए उत्कंधर होते हैं। दुःख से कैसे मुक्ति हो? इस जिज्ञासा का समाधान ऋषियों ने विभिन्न स्वरों में दिया है। किंतु प्रतिपाद्य भिन्न नहीं है। दुःख-मुक्ति की पद्धति ही साधना-पद्धति बन गई, योग बन गया। कर्म-योग, ज्ञान-योग, भक्ति-योग, उपासना-योग आदि भिन्न-भिन्न नामों से उसे संबोधित किया गया है, किंतु इतना ही नहीं, जिस-जिस व्यक्ति द्वारा प्रणीत हुई उसके नाम या संप्रदाय के नाम से भी वह जुड़ गई। जैसे—जैन साधना पद्धति, बौद्ध साधना-पद्धति, हिंदू साधना-पद्धति आदि-आदि समस्त सरिताएँ अंत में जैसे सागर में विलीन हो जाती हैं वैसे ही स्वयं तक पहुँचकर साधना-विधियाँ भी विलीन हो जाती हैं, क्योंकि सभी पद्धतियों का ध्येय है—सत्य का साक्षात्कार। साधना का अवलंबन लिए बिना सत्य का अनुभव कठिन है।

बुद्ध से पूछा गया—'कैसे मिली आपको सिद्धि?'

बुद्ध ने कहा—'मत पूछो, कैसे मिली? जब तक किया तब तक नहीं मिली और जब करना छोड़ा, मिल गई।' बुद्ध ने किया भी और नहीं भी किया। उस नहीं करने के लिए ही वह करना हुआ। महावीर के जीवन में भी यही घटित हुआ। वर्षों किया और जब साक्षात्कार हुआ तब पूर्ण मौन-अक्रिय-संवर, ध्यान-मुद्रा में लीन हो गए। संतजन जिस मार्ग से चले और सत्य को उपलब्ध हुए, वही साधना-पथ बन गया।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न ११ : कर्म के आठ प्रकारों में शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप, घाति-अघाति कर्म कितने हैं?

उत्तर : ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय व अंतराय—ये एकांत अशुभ व पाप हैं। ये घाति कर्म हैं।

प्रश्न १२ : घाती कर्मों में देशघाती कितने हैं और सर्वघाती कितने?

उत्तर : वैसे चारों घाती कर्म देशघाती हैं। सर्वघाती कोई कर्म नहीं हैं। आत्म गुणों की सर्वथा घात कभी नहीं होती। आंशिक उज्ज्वलता अभवी जीवों के भी होती है। चारों घाती कर्मों का क्षयोपशम न्यूनाधिक रूप में सभी छद्मस्थ जीवों में रहता ही है, अतः कर्म देशघाती ही होते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

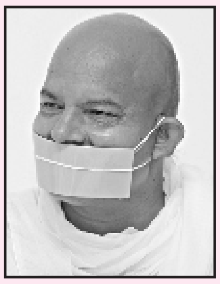

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

श्रावक श्री रूपचंदजी सेठिया

पहले कुछ वर्षों तक वे भोजन के लिए चाँदी की थाली तथा कटोरियों का प्रयोग करते थे, परंतु बाद में उन्हें वह अपनी सादगी के लक्ष्य से विपरीत अनुभव होने लगा तब पत्थर की थाली और कटोरी का प्रयोग करने लगे। भोजनोपरांत हाथ धोते समय थाली और कटोरी को भी धो लेते और वह पानी पी जाते।

घर के बर्तनों का धोवन तथा जूठा पानी या तो पशुओं को पिला दिया जाता या धूप में गिरा दिया जाता था। उसे एक जगह इकट्ठा करके रखना उन्हें पसंद नहीं था। वैसा करने में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति तथा हिंसा होने की संभावना रहती थी। श्लेष्म आदि थूकने का काम पड़ता तो एक तरफ मिट्टी की जगह में थूकते और उस पर मिट्टी डाल देते। पुरानी परंपरा के अनुसार वे अपने शरीर के दही लगाकर स्नान किया करते थे। स्नान के उस चिकने पानी को भी एक बर्तन में इकट्ठा करवा कर धूप में गिरवा देते। स्नान करने में वे परिमित पानी का ही प्रयोग किया करते। पहले कुछ वर्षों तक तो पाँच सेर पानी काम में लेते, परंतु पीछे घटाते-घटाते पैंतालीस तोले का ही प्रयोग करने लगे।

वे रुई भरा वस्त्र न ओढ़ते-पहनते और न बिछाते थे। सर्दी में भी तेईस हाथ से अधिक कपड़ा रात को काम में नहीं लेते थे। दिन तथा रात में अपने उपयोग में आने वाले वस्त्र का उनका प्रमाण उनसठ हाथ था।

प्रतिदिन सामायिक तथा दोनों समय प्रतिक्रमण किया करते थे। कहीं दूसरे गाँव जाने का अवसर होता तो मार्ग में भी प्रतिक्रमण के समय सवारी से उतर जाते और शुद्ध जगह देखकर प्रतिक्रमण करते। प्यास उन्हें कुछ अधिक लगा करती थी, फिर भी निरंतर चौविहार किया करते। सं० १९७२ के बाद उन्होंने रेल पर चढ़ने का परित्याग कर दिया। उनके बाद जहाँ भी जाते 'बहली' से जाया करते। मरणासन्न स्थिति में भी विदेशी औषध लेने का त्याग था। पारणा के सिवा शेष समय सदैव प्रहर दिन के बाद ही भोजन करते।

वे अचित्त पानी ही पीया करते थे। उसे प्रातः सायं दोनों समय छनवाते। इतना ही नहीं, उनके सारे घर का पानी भी दोनों समय छाना जाता था। हवेली चिनवाई गई, उसमें जितना भी पानी लगा, वह सारा छानकर ही काम में लिया गया।

उनमें अतुलनीय पाप-भीरूता थी। छोटे से छोटे कार्य में भी पूरी सावधानी बरतते और विवेक से काम लेते। सचित्त वस्तु के स्पर्श से वे प्रायः स्वयं को बचाते रहते। मार्ग में यदि कोई सचित्त वस्तु पड़ी होती तो वे उससे बचकर निकलते। नख आदि कटवाते तो उन्हें धूल में नीचे गड़वा देते ताकि चावल समझकर भूल से खा लेने पर किसी पंखी के गले में अटक न जाए। घर में घृत, तेल, चासनी, पानी आदि को उघाड़ा नहीं रहने देते। किसी भी मीठी वस्तु के टपके कहीं गिर जाते तो उन्हें अचित्त पानी से तत्काल धुलवाकर साफ करवा देते।

उनके संस्कार बहुत उन्नत थे। हर कार्य में जैन संस्कारों को प्रमुखता देना उनका स्वभाव था। देव-सहाय की याचना को वे मानसिक दीनता मानते थे। अपनी समस्याओं का अपने ही बल पर हल निकालना उन्हें पसंद था। साधारणजन जहाँ कार्य-सिद्धि के लिए जैन-जैनेत्तर सभी देवों को पूजते हैं, वहाँ वे किसी भी देवी अथवा देवता को नमस्कार तक नहीं करते थे, चढ़ावा तथा सीरणी की तो बात ही क्या हो सकती थी।

परिवार में विवाह आदि प्रसंग पर यदि कोई ब्राह्मण को बुलाता तो वे उसका विरोध तो नहीं करते, परंतु विवाह के समय बुलाए जाने पर भी वे वहाँ जाकर नहीं बैठते।

मृतक व्यक्ति के फूल गंगाजी में डाले जाने चाहिए—यह बात सामान्य जनों में बहुत प्रचलित है, परंतु उनका उस बात पर कोई विश्वास नहीं था। इसी प्रकार कागोल की प्रथा को भी वे एक कुसंस्कार माना करते थे।

(क्रमशः)

✦ श्रम करो, पर निष्पत्तिपरक श्रम करो। लक्ष्यहीन व अल्पफलप्रद श्रम से क्या लाभ?
—आचार्यश्री महाश्रमण

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

चेन्नई।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी एवं साध्वी लावण्यश्री जी का आध्यात्मिक मिलन वेस्ट माम्बलम में कुशलराज अशोककुमार बंबोली के निवास स्थान पर हुआ।

तेरापंथ धर्मसंघ में चारित्रात्माओं के दो सिंघाड़ों के आपसी मिलन का दृश्य वात्सल्य, प्रेम एवं विनय-समर्पण से ओत-प्रोत अभूतपूर्व होता है। मिलन दृश्य को निहारने एवं उन अविस्मरणीय पलों के साक्षी बनने हेतु श्रावक-श्राविकाएँ दूर-दूर से पधारकर भाव-विभोर होकर धन्यता का अनुभव करते हैं। ऐसा परम सौभाग्य अनेकों महानुभावों को सहज संप्राप्त हुआ।

साध्वी शिवमालाजी ने साध्वी लावण्यश्री जी की अगुवानी कर भक्ति की। साध्वी अमितरेखा जी, साध्वी अर्हमप्रभा जी एवं साध्वी रत्नप्रभा जी ने सामुहिक भक्ति गीत का संगान किया। प्रत्युत्तर में साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने भी भक्ति गीत का संगान किया। साध्वी लावण्यश्री जी ने भक्तिरत साध्वियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने पुराने संस्मरणों को उद्धृत कर आपकी निष्काम सेवा भावना की प्रशंसा की। साध्वीश्री जी ने सभी चारित्रात्माओं के निरामय स्वस्थ स्वास्थ्य एवं आगामी निर्विघ्न विहार यात्रा की मंगलकामना की।

शासनश्री साध्वी शिवमालाजी ने साध्वी लावण्यश्री जी एवं सहवर्तिनी साध्वियों की विशेषताओं का गुणगान करते हुए कहा कि आज अनायास ही मिलन का कार्यक्रम हो गया। आपका संसारपक्षीय परिवार चेन्नई के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवासित है। आप काफी दिनों से विभिन्न उपनगरों में विहरण करती हुई धर्मसंघ की प्रभावना कर रही है।

सहवर्तिनी साध्वियाँ भी विद्वत्ता में विकसित है। सभी साध्वियाँ अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहती हुई जन-जन में जागृति का महनीय कार्य करती रहें, यही मंगलकामना।

मिलन समारोह में ट्रिप्लीकेन क्षेत्र से विजयकुमार गेलड़ा, राजेश लुंकड़, दीपक कात्रेला, राजेश बोहरा, महावीर संचेती ने अपनी सहभागिता दर्ज की। वेस्ट मांबलम, टी-नगर, कोडम्बाकम, वडपलनी, सैदापेट, मदुरावायल एवं आसपास के अनेक क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रद्धालु भाई-बहनें संभागी बनीं।

पंच दिवसीय दक्षिणांचल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

बैंगलोर।

जैसा वातावरण और संगत होती है वैसे ही संस्कारों का निर्माण होता है। यह विचार मुनि हिमांशु कुमार जी ने तुलसी महाप्रज्ञ सेवा केंद्र कुम्बलगुड में आयोजित शिविर के शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। मुनिश्री ने शिविरार्थियों से अनुशासन के पालन, समयबद्धता और आपसी सहयोग से शिविर को सफल बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संस्कारी पीढ़ी ही हमारे शुभ भविष्य का निर्माण करने में समर्थ है।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि संस्कार हमारे जीवन की नींव हैं। सद्संस्कार श्रेष्ठ जीवन का महत्त्वपूर्ण घटक है। मुनिश्री ने संस्कारी जीवन के लिए तीन 'वी' की चर्चा करते हुए विनय, विवेक और विद्या को आवश्यक बताया।

इससे पूर्व मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि दृष्टि श्रेष्ठ है तो सृष्टि भी श्रेष्ठ है। हमारी दृष्टि सद्गुण केंद्रित हो जिससे हम श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकें। मुनि हेमंत कुमार जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि वर्तमान युग में संस्कारों के प्रति उत्साह होना एक आश्चर्य है। जिसे दुनिया को आठवाँ आश्चर्य भी कहा जा सकता है।

तेरापंथी सभा, बैंगलुरु के अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने कहा कि यह शिविर आपके जीवन में विकास का मार्ग प्रशस्त करे। साथ ही उन्होंने आयोजन में सहयोगी संस्थाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। तेरापंथी महासभा के आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा अपना वक्तव्य दिया। शिविर के आयोजन में मुनिश्री की मेहनत, परिश्रम के साथ कार्यकर्ताओं का पुरुषार्थ लगा एवं सहयोग प्राप्त हुआ। बालक हिमांशु सहलोत ने मंगलाचरण किया।

पैंसठिया छंद-यंत्र अनुष्ठान का आयोजन

किशनगंज।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में पैंसठिया छंद-यंत्र अनुष्ठान का तेरापंथ सभा, किशनगंज द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि हम बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि हमें जैन धर्म मिला। तीर्थंकर प्रभु की वाणी सुनने का अवसर मिला। दुनिया में सबसे बड़े ज्ञानी और शक्तिशाली तीर्थंकर होते हैं। दुनिया में उनसे बड़ा ज्ञानी और शक्तिशाली कोई नहीं है। विघ्न, बाधा का निवारण करने के लिए पैंसठिया छंद बहुत उपयोगी है। यंत्र को सिद्ध करने के बाद प्रतिदिन इसका पाठ करना चाहिए।

पैंसठिया छंद यंत्र अनुष्ठान हम सबके जीवन को सार्थक बनाए। सबका जीवन मंगलकारी, कल्याणकारी बने, यही मंगलकामना।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि साधना के अनेक प्रकार हैं—जप-तप, ध्यान से साधना-आराधना की जाती है। जप, तप ध्यान हमारी विचारधारा को निर्मल बनाने, भाव की शुद्धि का सबसे बड़ा माध्यम है। तीर्थंकर की जपाराधना हमारे भीतर वीतरागता को बढ़ाए, ऐसा प्रयास एवं भाव रहना चाहिए। मन की शुद्धि भावों की विशुद्धि के लिए मंत्र की साधना करनी चाहिए। सभा अध्यक्ष विमल दफ्तरी ने आभार व्यक्त किया। मनीष दफ्तरी ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी।

हिंसा पर अहिंसा की विजय

ईरोड।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'हिंसा पर अहिंसा की विजय' प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि हिंसा पर अहिंसा की विजय कब होती है, जब व्यक्ति करणीय और अकरणीय कार्यों को जानते हों। अहिंसा आत्म विकास का अमोघ यंत्र है, दिशा सूचक यंत्र है। भगवान महावीर ने कहा कि सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, अहिंसा की चेतना को जाग्रत करना है, तो अनावश्यक हिंसा से बचें।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि व्यसन और फैशन से हमारी संस्कृति डूब रही है। मल-मूत्र से परिपूर्ण शरीर को सजाने-संवारने के लिए पशुओं पर खौफनाक तरीकों का उपयोग किया जा रहा है। खुलेआम हिंसा की जा रही है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम की शुरुआत रक्षा बाफना एवं महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

स्वागत भाषण उपाध्यक्षा मंजु बोथरा और आभार ज्ञापन मंत्री पिंकी वेदमूथा द्वारा किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण का दीक्षा कल्याण

हैदराबाद।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा स्वर्णोत्सव पर सिकंदराबाद, हैदराबाद वासी श्रावक परिवार ने गुरु चरणों में अभिवंदना स्वरूप ७०० साधिका एकासन, आयंबिल एवं उपवास का एक साथ प्रत्याख्यान कर अपनी खुशी जाहिर की। इस तप साधना में ज्ञानशाला, किशोर मंडल, कन्या मंडल, तेयुप, महिला मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकागण, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति एवं तेरापंथ सभा के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

कार्यक्रम में साक्षी बने मंत्री तेलंगाना सरकार श्रीनिवास यादव ने कहा कि जैन समाज के महान गुरु के जन्मोत्सव पर आना, मेरा परम सौभाग्य है। इस अवसर पर हैदराबाद एविट्स पार्षद ममता संतोष गुप्ता भी उपस्थित रही।

तप के साथ साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा 'ॐ श्री महाश्रमण गुरुवे नमः' ग्यारह करोड़ जप अनुष्ठान का प्रारंभ करवाया गया। आचार्यश्री के संयम स्वर्णोत्सव वर्ष पर यह जप की श्रद्धासिक्त भेंट और जप की इकलयता के सभा भवन का प्रांगण महाश्रमणमय बन गया।

इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि महातपस्वी की अभ्यर्थना में तप और जप का पवित्र संगम गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त कर रहा है। आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याणक वर्ष पर जप की अखंड ज्योत प्रज्वलित रहनी चाहिए।

अणुव्रत गिरते नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने का प्रकल्प

चंडीगढ़।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी थे। एक आंदोलन जिसका उद्देश्य जीवन में नैतिकता लाकर सत्य और अहिंसा के द्वारा विश्व शांति के लिए वातावरण का निर्माण करना था। अणुव्रत गिरते नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने का प्रकल्प है। जिस प्रकार अणु का एक कण पूरे ब्रह्मांड में विस्फोट कर सकता है, वैसे ही अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हर समस्या को सुलझा सकते हैं। उन्होंने कहा कि अणुव्रत के तीन कार्य हैं—पहला व्यक्ति को चरित्रवान बनाना, दूसरा व्यवहार की शुद्धि करना तथा तीसरा धर्म समन्वय करना है। अणुव्रत का उद्देश्य मानव को मानव बनाना है। ये शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के अवसर पर अणुव्रत समिति, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित संयम दिवस पर कहे।

मनीषी संत ने आगे कहा कि स्वतंत्र भारत के महान समाज सुधारक आचार्यश्री तुलसी ने इंसानी कौम की बेहतरी के लिए अणुव्रत को छोटे-छोटे ११ नियमों में ढालकर अणुव्रत आंदोलन का आगाज करते हुए शंखनाद किया।

आचार्यश्री तुलसी ने असांप्रदायिक धर्म का आंदोलन चलाया, जो जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत एवं धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव जाति को जीवन-मूल्यों के प्रति आकृष्ट कर सके। इस असांप्रदायिक मानव धर्म का नाम है—अणुव्रत आंदोलन।

भक्ति संध्या का आयोजन

जसोल।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस 'युवा दिवस' के अवसर पर अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० भव्य भक्ति संध्या का आयोजन स्थानीय राजा चौक स्थित नया ओसवाल भवन, जसोल में हुआ।

तेयुप मंत्री अमित सुराणा ने बताया कि श्रद्धासक्ति भावों व सुरों से सजी एक शाम आचार्यश्री महाश्रमण के नाम गायिका अभिलाषा बांठिया ने मधुर भजन की प्रस्तुतियाँ दी। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र गीत से हुई। तेयुप की ओर से बांठिया का सम्मान किया गया। साथ ही तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने सभी प्रायोजक परिवार का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, जसोल अध्यक्ष उषभराज तातेड़, सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, भंवरलाल भंसाली, मीठालाल कोठारी, मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, बाबूलाल छाजेड़, मदनलाल भंसाली, शांतिलाल भंसाली, कालूराम संखलेचा, बाबूलाल डोसी, प्रवीण भंसाली, पवन छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा दीक्षार्थी अंकिता चोरड़िया व संजना पारख का दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दीक्षा सहज नहीं कठिन कार्य है। दीक्षा मात्र वेश परिवर्तन नहीं अर्पित क्लेश परिवर्तन का पथ है। आध्यात्मिक क्षेत्र में दीक्षा का बहुत बड़ा महत्त्व है। जिन भौतिक सुख-सुविधाओं, विषय-वासनाओं के पीछे पड़कर इंसान अपना विवेक तथा ईमान तक खो बैठता है। दीक्षार्थी उन्हें मिट्टी के ढेले की तरह ठुकराकर त्याग, संयम, साधना के कठिनतम मार्ग को अपनाता है। दीक्षा अनंत की यात्रा है। संयम पथ भौतिकता से आध्यात्मिक की यात्रा है।

दक्षिण हावड़ा की दीक्षार्थी अंकिता चोरड़िया, संजना पारख गुरु चरणों में दीक्षित होने जा रही है। इनको शिक्षा के रूप में कहना चाहूँगा कि वैराग्य विश्वास बने, स्वाध्याय श्वास बने, समता सुवास बने एवं गुरु आज्ञा जीवन का प्रकाश बने। जिस लक्ष्य को लेकर संन्यास के पथ पर बढ़ रही हो उसी लक्ष्य के साथ आगे बढ़ती रहना व गुरु इंगित की आराधना करते रहना। मैं आपके भावी आध्यात्मिक जीवन के प्रति मंगलकामना करता हूँ।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर दीक्षार्थी अंकिता चोरड़िया ने कहा कि शरीर की रक्षा करते हैं तो आत्मा की रक्षा नहीं होती, आत्मा की रक्षा करते हैं तो शरीर की रक्षा स्वतः हो जाती है। इस अवसर पर दीक्षार्थी संजना पारख ने कहा कि दीक्षा स्वयं को जानने का सुंदर माध्यम है। गुरुदेव को नहीं गुरुदेव की मानेंगे तभी कल्याण होगा। दीक्षा के उपलक्ष्य में वाचिक हिंसा नहीं करने का संकल्प ग्रहण करने का आह्वान करती हूँ।

इस अवसर पर बोधार्थी बहन प्रेरणा बोथरा, दक्षिण हावड़ा, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, तेरापंथ सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने दीक्षार्थी बहनों का परिचय दिया। तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया, तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा, टीपीएफ के अध्यक्ष मनोज सेठिया, संजय पारख प्रियांश बरड़िया, सायर देवी चोरड़िया ने मंगलभावना में अपने विचार व्यक्त किए।

स्वागत भाषण विक्रम भंडारी ने दिया। तेरापंथ कन्या मंडल, तेमम, सुरेंद्र चोरड़िया ने गीत का संगान किया। मंगलाचरण राधव रेसिडेंसी की महिलाओं ने स्वात गीत के संगान से किया। आभार ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष बजरंगलाल डागा, राधव रेसीडेंसी से राकेश चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, राजाजीनगर द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग की सप्त दिवसीय कार्यशाला जे०पी०पी० जैन समणी सेंटर श्रीरामपुरम में सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ आगाज।

तेयुप मंत्री कमलेश चोरड़िया ने पधारे हुए ट्रेनर दिनेश मरोठी और सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़ और सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की।

सीपीएस प्रशिक्षक दिनेश मरोठी ने कार्यशाला के प्रथम दिन सभी प्रतिभागियों का एक-दूसरे का परिचय सत्र के माध्यम से कार्यशाला प्रारंभ करते हुए वक्तव्य कला की आवश्यकता बताते हुए अच्छे वक्ता के लिए उसके परिधान का महत्त्व, खड़े रहने का तरीका, बात करने की कला और लोगों को अपने वक्तव्य के प्रति आकर्षित करना और किस तरह से आत्मविश्वास के साथ मंच पर आकर बात करना और अपने अंदर छिपे भय को कैसे बाहर निकालना, के बारे में विस्तार से समझाया।

राष्ट्रीय सीपीएस प्रभारी सतीश पोरवाड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें समय और अनुशासन का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। इस कार्यशाला में ३० प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

इस अवसर पर परिषद से सीपीएस कार्यशाला प्रभारी सुनील मेहता, संयोजक दीपक गिलुंडिया, अभिषेक पीपाड़ा, आशीष मांडोत, कमलेश गन्ना, रनीत कोठारी, भावेश मुथा की उपस्थिति रही।

दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी का अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ। मंगलाचरण तेयुप सरदारपुरा के साथी नरेंद्र सेठिया द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने स्वागत वक्तव्य व मुमुक्षु बहन का परिचय प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु बहन के संसारपक्षीय बुआ महाराज साध्वी चारित्रप्रभा जी ने मुमुक्षु के आगामी जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि दीक्षा लेना एक नए जीवन में प्रवेश करने जैसा है। दीक्षा तो ऐसा रत्न है जो देखने की नहीं, बल्कि अनुभव करने की चीज है। साध्वी किरणयशा जी ने कहा कि जो व्यक्ति संयम के पथ पर चलता है, वह असीम आनंद को पाता है।

मुमुक्षु आयुषी ने बताया किय दीक्षा लेने का मानस मैंने इसलिए बनाया क्योंकि मैंने नश्वर संसार के मोह को छोड़कर जो आत्मा शाश्वत है उसे केंद्र में रखकर यह निर्णय लिया है। आत्मा के आनंद को प्रमुखता दी। जीवन में वैराग्य जागरण में जसोल में विराजित मुनिश्री सहयोगी बने, गुरुदेव का अप्रत्यक्ष आशीर्वाद और प्रेरणा सदैव मिलती रही और मेरी माता जी ने मेरे इस पथ पर बढ़ाने में काफी सहयोग दिया।

साध्वी कुंदनप्रभा जी ने कहा कि संकल्पी व्यक्ति ही संयम पथ स्वीकार कर सकता है और संकल्प के साथ सहयोग भी अपेक्षित रहता है। पारिवारिकजनों का सहयोग व्यक्ति को संयम पथ पर अग्रसर करता है। दीक्षा लेना भी आसान कार्य नहीं है, सहनशीलता, नम्रता, समर्पण हो तब दीक्षा ली जा सकती है। आयुषी बाई के आगामी आध्यात्मिक जीवन के प्रति मंगलकामना।

कार्यक्रम में साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीत, तेमम, सरदारपुरा, जितेंद्र गोगड ने गीत द्वारा व तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी, तेमम अध्यक्ष सरिता कांकरिया ने वक्तव्य द्वारा मुमुक्षु आयुषी के संयम जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त कीं

पारिवारिक जनों में मुमुक्षु बहन के पिता महेंद्र चोपड़ा, माता कविता देवी, लता मेहता आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विद्युतप्रभा जी ने किया।

जीवनशैली कार्यशाला का आयोजन

अमराईवाड़ी।

मुनि डॉ० मदन कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप अमराईवाडी ओढव के द्वारा 'जीवन शैली कार्यशाला अब जवानी कैसे जिएँ' का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत में तेयुप के अध्यक्ष ने सबका स्वागत किया। वरिष्ठ उपासक डालमचंद नौलखा ने अपने विचार प्रस्तुत किए और कहा कि मनुष्य के जीवन के तीन पड़ाव होते हैं—एक बचपन, जवानी और वृद्धावस्था। उसमें से जवानी सबसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव है, जिसमें फिसलन भी होती है और जीवन का आर्थिक विकास भी करना होता है। दोनों का बैलेंस जरूरी है जो अध्यात्म के द्वारा पूरा किया जा सकता है, क्योंकि मनुष्य गृहस्थ है उसके पश्चात डॉ० मुनि मदनकुमार जी ने विस्तार से कार्यशाला के बारे में जानकारी दी। मुनिश्री ने कहा कि यदि युवा को अपना जीवन सफल बनाना है तो अध्यात्म का रास्ता सबसे सीधा है। क्योंकि युवा अवस्था में मनुष्य में जोश भी होता है और चंचलता भी होती है, इंसान गलत रास्ते पर भी चला जाता है, यदि इंसान अध्यात्म ध्यान का रास्ता अपनाता है तो वो हमेशा सफल होता है।

कर्म निर्जरा का सशक्त उपाय तप

ईरोड।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में भंवरलाल भूतोड़िया के द्वितीय वर्षीतप अनुमोदनार्थ ईरोड तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में कार्यक्रम रखा गया। साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि मनुष्य की सामान्य मनोवृत्ति होती है कि वह रोग आने के बाद जागता है। होना यह चाहिए कि आदमी बीमारी आने से पहले सावधान रहे, स्वस्थ अवस्था में ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे।

दवाईयों से ज्यादा बीमारियों का अविष्कार हो रहा है। नित नए रोग बढ़ते जा रहे हैं। मन की शांति, सुखी जीवन, स्वस्थ के सुंदर माध्यम हैं। तप, तप मन व तन की स्वास्थता, कर्म निर्जरा का शाश्वत उपाय है। भंवरलाल ने भूतोड़िया दुबले-पतले होते हुए भी काफी तपस्या की है। और अभी दूसरे वर्षीतप का क्रम चालू है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि तप ओज है, नंदनवन है। तप से जीवन के संपित कर्मों का क्षेत्र होता है।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। पिंकी वेदमूथा, मंजु बोथरा ने स्वागत एवं दीपक भूतोड़िया, पिंकी भंसाली, रेणु नखत, पूजा बोथरा, पूनम दुगड़, कमला जीरावला आदि ने अनुमोदना व्यक्त की।

सेवाभावी महानुभाव धर्मचंद बोथरा, हीरालाल चोपड़ा, महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत, तेयुप अध्यक्ष सुभाष बैद, जेंटल भूतोड़िया, मोक्ष चोपड़ा आदि ने प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों द्वारा भावपूर्ण गीतिका, खुशबू वीणा भूतोड़िया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दुलीचंद पारख ने किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

वृहद कोलकाता।

गुरुदेव की असीम कृपा से महासभा भवन में वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला आंचलिक समिति द्वारा कोलकाता सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला की पूर्व ज्ञानार्थी वर्तमान मुमुक्षु अंकिता बाई एवं संजना बाई की मंगलभावना का कार्यक्रम रखा गया।

महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया, महासभा के मंत्री विनोद बैद, कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली एवं सभी सभा के अध्यक्ष-मंत्री, स्थानीय संयोजक में से कोई ना कोई हर क्षेत्र से अवश्य उपस्थित थे। साथ ही सभी क्षेत्रों से अधिक से अधिक प्रशिक्षिकाएँ और हमारी लगभग पूरी टीम उपस्थित थी। इस कार्यक्रम का शुभारंभ मालचंद भाई ने नमस्कार महामंत्र के साथ किया। सभी क्षेत्र की बहनों ने मिलकर मंगलाचरण किया।

मनसुख भाई ने अपना वक्तव्य रखा और कहा कि गुरुदेव के अनेकों अवदानों में ज्ञानशाला मुख्य है। महासभा का यह कर्तव्य है कि इस कार्य के प्रति सदैव सजग रहे और पूरी निष्ठा से अपना यह दायित्व निभाए और वह निभाती भी है। सभी सभा का भी यह कर्तव्य है ज्ञानशाला के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक रहे। मंत्री ने अपना वक्तव्य रखा।

कोलकाता सभा के अध्यक्ष ने अपने भाव रखे। आंचलिक संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया ने कोलकाता ज्ञानशाला की विस्तृत जानकारी दी। आंचलिक समिति के सदस्य मालचंद भंसाली एवं अंजू ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। मुमुक्षु अंकिता बाई, संजना बाई ने अपने भाव रखते हुए कहा कि हम दोनों ज्ञानशाला की ज्ञानार्थी रही हुई हैं। इस ज्ञानशाला से ज्ञान अर्जन करके मुमुक्षु बनकर गुरु चरणों में संघ की सेवा हेतु अपने आपको समर्पित करने जा रही हूँ।

कार्यक्रम का संयोजन बेलडांगा की मुख्य प्रशिक्षिका स्नेहा बाई ने किया। उनके प्रति भी बहुत-बहुत साधुवाद।

✦ तात्कालिक लाभ को अधिक महत्त्व मत दो। धैर्य रखो व दीर्घकालिक लाभ पर चिंतन को केंद्रित करो।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ भवन तल उद्घाटन

शास्त्रीनगर, दिल्ली।
नवनिर्मित तेरापंथ भवन, शास्त्रीनगर में तेयुप के भवन तल का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से किया गया। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के पावन मंगलपाठ व मंगल आशीर्वाद के साथ उद्घाटन पूर्ण हुआ। तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष विकास सुराणा अपने प्रबंधन मंडल तथा युवा साथियों के साथ सहभागी बने।

तेयुप, दिल्ली के जैन संस्कार विधि प्रभारी एवं संस्कारक प्रकाश सुराणा, सह-प्रभारी एवं संस्कारक मनीष बरमेचा, संस्कारक राजकुमार जैन, सुरेंद्र नाहटा, अशोक सेठिया, हेमराज राखेचा, हिम्मत राखेचा, प्रवीण गोलछा, पवन गिडिया ने जैन संस्कार विधि से यह कार्यक्रम संपादित किया।

कार्यक्रम में समाज भूषण अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया, भामाशाह कन्हैयालाल पटावरी, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी व कल्याण परिषद संयोजक कैलाशचंद जैन, अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महासभा उपाध्यक्ष व अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष संजय खटेड़, तेयुप के पूर्व अध्यक्षों के साथ अनेक युवा साथी उपस्थित रहे। तेयुप, दिल्ली ने पधारे हुए अतिथियों एवं पूर्व अध्यक्षों का पटका पहनाकर सम्मान किया।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी का भवन में मंगल प्रवेश के साथ मंचीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा कि शास्त्रीनगर क्षेत्र में तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन एवं तेयुप भवन का लोकार्पण हुआ है। इस भवन का प्रयोग आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों में होना चाहिए।

अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष व दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने बताया कि १९९९ में मेरे अभातेयुप अध्यक्षीय कार्यकाल के दौरान तेयुप, दिल्ली के तीन दशक पूर्ण होने पर तेयुप, दिल्ली द्वारा भवन क्रय की योजना बनाई गई थी।

अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष व महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने तेयुप की पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि इस भवन तल के क्रय व निर्माण में स्व० आसकरण आंचलिया, पवन चोपड़ा व तेरापंथी सभा, शास्त्रीनगर का विशेष सहयोग रहा।

तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष विकास सुराणा ने कहा कि यह भवन तल हमारे पूर्व अध्यक्षों द्वारा किए गए श्रम का परिणाम है एवं इसके क्रय व निर्माण में शास्त्री नगर सभा का उल्लेखनीय योगदान रहा है, इस भवन का आध्यात्मिक व धार्मिक उपयोग हो ऐसा हमारा पूर्ण प्रयास है। साथ ही अभातेयुप का एक प्रमुख उपक्रम आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल की भी परिकल्पना व संचालन इस भवन तल पर की जा सकती है ऐसा प्रस्तावित है।

भवन तल निर्माण में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले दानदाताओं का मोमेंटो भेंट कर सम्मान किया गया। भवन तल निर्माण में अपना समय एवं श्रम नियोजित करने वाले भवन समिति के सदस्य मनोज बोरड़, कमल गांधी, पुखराज लोढ़ा, राकेश बैंगाणी तथा अर्थ संयोजक प्रभात खटेड़ एवं कुशल गधैया एवं भवन निर्माण सहयोगी मानस बोथरा, सौरभ आंचलिया का भी स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न सभा-संस्था के पदाधिकारीगण, तेयुप दिल्ली के पूर्व अध्यक्षों व मंत्रियों सहित श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

शाहीबाग, अहमदाबाद।
मुनि डॉ० मदन कुमार जी व मुनि सिद्धार्थ कुमार जी के अहमदाबाद शाहीबाग में करीब दो महीने के प्रवास के साथ आगे की यात्रा व आगामी चातुर्मास के लिए तेरापंथी सभा द्वारा मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग पर आयोजित किया गया।

डॉ० मुनि मदन कुमार जी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि गुरुकृपा से शाहीबाग का अकल्पित दो महीने का प्रवास सानंद, श्रेष्ठ सफल उपलब्धि भरा रहा, अनेक लोगों ने तत्त्वज्ञान सीखने में, उपासक बनने के लिए आगे बढ़े। तेरापंथ की सभी संस्थाओं द्वारा अनेक कार्यक्रम हुए, जिसमें उपासक प्रशिक्षण कार्यशाला विशेष उपलब्धि भरा रहा। आगे मुनिश्री ने अपने बाल्यावस्था, वैरागी जीवन, मुनि के कुछ संस्मरणों यादों को ताजा किया।

मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति देने के साथ बताया कि कृतज्ञता की अभिव्यक्ति करने का अवसर होता है मंगलभावना समारोह। आगे कहा कि शाहीबाग के श्रावकों में धर्माराधना व तत्त्वज्ञान सिखने की लगन को देखते हुए मुनिश्री ने अधिक समय तत्त्वज्ञान सिखाने में लगाया।

सभा अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया, महिला मंडल मंत्री अनीता कोठारी, तेयुप अध्यक्ष अरविंद संकलेचा, टीपीएफ प्रदीप बागरेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा, उत्तर सभा गणपत खतंग, अमराईवाड़ी सभा गणपत हिरण, रमेश पगारिया, पश्चिम सभा सुरेश दक, मुनिश्री के परिवार से घीसूलाल जीरावला, भवरलाल जीरावला, कमलादेवी जीरावला, अनिल जीरावाला सजित परिवार से अनेक जनों ने अपनी भावनाएँ कविता, मुक्तक, विचारों द्वारा अपने भाव व्यक्त किए।

भावभरी सुमधुर सामुहिक गीतिका द्वारा मंगलभावना पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री विकास पितलिया ने भाव व्यक्त किए।

अटूट बंधन - माँ-बेटी का रिश्ता कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।
अभातेममं के निर्देशानुसार गंगाशहर महिला मंडल के नेतृत्व में तेरापंथ कन्या मंडल, गंगाशहर ने साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में अटूट बंधन माँ-बेटी का कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। इस कार्यशाला में ८ माँ-बेटी की जोड़ियों ने भाग लिया।

शांति निकेतन व्यवस्थापिका शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी व साध्वी ललितकला जी ने एक कहानी के द्वारा माँ-बेटी के भावों को व्यक्त किया और कन्याओं को धर्म के प्रति जागरूक रहने का बताया। माँ ही अपने बच्चों में अच्छे संस्कार भरती है। उन्होंने बताया कि एक माँ और बेटी में आपसी सामंजस्य होना बहुत जरूरी है।

सह-संयोजिका वर्षा बोथरा ने तरह-तरह के गेम्स खिलवाए। सभी जोड़ियों ने एक-एक करके अपने आपस के खट्टे-मीठे अनुभवों को बताया। बेटियों ने बताया कैसे माँ अगर डाँटती है तो प्यार भी उतना ही करती है। माँ ने बताया कि कैसे उनकी बेटियाँ उनके लिए उनका अभिमान हैं। कार्यशाला में निर्णायक के रूप में महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा संतोष बोथरा एवं शारदा डागा ने भूमिका निभाई और उन्होंने बताया कि बेहतर बेटी और माँ का खिताब मानसी पुत्री कोमल महनोत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका योगिता भूरा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में कन्या मंडल प्रभारी सीमा बोथरा द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

इस कार्यक्रम के साथ ही कोलाज मेकिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें लगभग १५ कन्याओं ने भाग लिया। जिसमें नीति सेठिया ने प्रथम, प्रिया संचेती द्वितीय, प्रीति बैद व वर्षा सेठिया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

महाश्रमणोस्तु मंगलम के आयोजन

जयपुर

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में महाश्रमणोस्तु मंगलम भव्य भक्ति संध्या का आयोजन मुनि तत्त्वरुचि जी के सान्निध्य में तेयुप, जयपुर द्वारा भिक्षु साधना केंद्र में किया गया।

मुनिश्री ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मात्र १२ वर्ष की अल्पायु में सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन अध्यात्म को समर्पित कर दिया। ओजस्वी वाणी, कुशाग्र बुद्धि एवं शांत आभामंडल के धनी आप तेरापंथ धर्मसंघ की महान आचार्य परंपरा में अपना नेतृत्व प्रदान कर अभिनव धर्मसंघ का मार्ग आलोकित कर रहे हैं। इसी तरह हम एक-दूसरे के पूरक के रूप में परस्पर सहयोग की भावना रखकर अपना आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं।

परिषद के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा ने स्वागत अभिनंदन करते हुए कहा कि धर्मसंघ के हजारों युवा तन, मन, कर्म शक्ति के साथ आचार्यश्री महाश्रमण जी के इंगित की आराधना कर रहे हैं।

महाश्रमणोस्तु मंगलम भव्य भक्ति संध्या के क्रम में संगायक राजेश धाड़ेवा, प्रदीप बाफना, सुनील लुनिया, मनीष चोरड़िया, संगायिका निकिता दुगड़, पूर्वा व साक्षी बांठिया, तनिषा लुनिया ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन संयोजक सौरभ जैन ने किया। कार्यक्रम में भिक्षु साधना केंद्र के अध्यक्ष नौरतन नखत की उपस्थिति रही।

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में एवं तेयुप, दिल्ली के तत्त्वावधान में महाश्रमणोस्तु मंगलम विषयानुसार आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य भक्ति संध्या का आयोजन रखा गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली स्तरीय १० गायक-गायिकाओं ने अपनी सुमधुर गीतिकाओं द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

राहुल बैद, राकेश चिंडालिया, शर्मिला बरड़िया, दीपिका छल्लाणी, चारू बांठिया, ईशांत नौलखा, पुलकित खटेड़, प्रवीण बैंगाणी, ललित श्यामसुखा, प्रवीण बैद, निष्ठा जैन एवं प्रिया सिंधी आदि ने सुमधुर स्वर लहरियों से अभिवंदना प्रस्तुत की।

इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जैन शासन के प्राण हैं, त्राण हैं और भैक्षव संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, गण की आन-बान और शान है। आचार्यप्रवर का इंद्रिय संयम, खाद्य संयम और वाणी संयम अनुत्तर है।

तेयुप के अध्यक्ष विकास सुराणा ने आचार्यप्रवर के दीर्घ जीवन की मंगलकामना की। तेरापंथ सभा, रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन, महामंत्री राजेंद्र सिंघी, कोषाध्यक्ष पराग जैन एवं पश्चिम विहार सभा अध्यक्ष सुशील कुमार जैन, प्रीतमपुरा अध्यक्ष प्रवीण बैंगानी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

संचालन प्रवीण बैद ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के उपाध्यक्ष मुकेश जैन ने किया।

सरदारपुरा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप सरदारपुरा द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का आयोजन किया गया।

साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में इस धम्मा जागरण का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेयुप भजन मंडली से जितेंद्र गोगड़, सुनील बैद, कवि जैन आदि ने सुमधुर गीतों का संगान किया।

इस धम्म जागरण में तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप, तेमम, तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

दक्षिण मुंबई

अभातेयुप के निर्देशन में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस पर भव्य भक्ति संध्या का आयोजन दक्षिण मुंबई में नाइस इन्श्युरेंस के प्रतिष्ठान में हुआ। भिक्षु भक्ति मंडल के सभी सदस्यों ने इस भक्ति संध्या में सुमधुर गीतों द्वारा आचार्य भिक्षु से आचार्य महाश्रमण के प्रति अपनी भाव अभिव्यक्ति दी। तेयुप के अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने सभी का स्वागत किया।

भक्ति संध्या में तेरापंथी सभा, दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, मंत्री दिनेश धाकड़, कुलदीप बैद, पंकज सुराणा, अशोक बरलोटा, अशोक धींग, पवन बोलिया, पंकज बोलिया आदि अनेक गणमान्य जनों की उपस्थिति रही।

✦ मध्यम कोटि की कामना वाला व्यक्ति दूसरों के अनिष्ट की इच्छा तो नहीं करता, किंतु अपने लिए भौतिक आकांक्षा करता है। लोक व्यवहार में इसे बुरा भी नहीं माना जाता।

– आचार्यश्री महाश्रमण

उत्तरांचल स्तरीय जैन संस्कार विधि संस्कारक प्रशिक्षण एवं निर्माण कार्यशाला व सम्मेलन

दिल्ली।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में उत्तरांचल स्तरीय जैन संस्कार विधि संस्कारक प्रशिक्षण एवं निर्माण कार्यशाला व सम्मेलन का द्विदिवसीय आयोजन तेयुप, दिल्ली द्वारा किया गया।

कार्यशाला व सम्मेलन के लिए ४५ सदस्यों ने रजिस्ट्रेशन करवाया। २२ सदस्यों ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज कराई।

कार्यशाला के प्रथम सत्र का शुभारंभ मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेयुप, दिल्ली के साथियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा ने उपस्थित जनों को करवाया एवं अध्यक्षीय स्वागत वक्तव्य दिया।

मुनिश्री ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताया कि जैन संस्कार विधि हिंसा से अहिंसा की ओर, असंयम से संयम की ओर, भोग से त्याग की ओर की संस्कृति है, इससे आत्म कल्याण के साथ स्वास्थ्य, अर्थ और समय की भी सुरक्षा होती है व इससे श्रावक व्रतों की पुष्टि होती है। गुरुदेव तुलसी द्वारा निर्देशित यह पद्धति केवल तेरापंथी ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जैन समाज के साथ इसे जन-जन अपनाए।

उद्घाटन सत्र का संचालन राज्य आयाम सहयोगी मनीष बरमेचा ने किया। आभार तेयुप, दिल्ली के मंत्री अभिनंदन बैद ने किया।

प्रथम सत्र में मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नवलखा ने जैन दर्शन, जैन सिद्धांत एवं जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपादित करने के बारे में बताया।

द्वितीय सत्र में संस्कारक विमल गुणेचा ने जैन संस्कृति, जैन जीवनशैली का विस्तृत विवरण सभी के समक्ष रखा।

तृतीय व चतुर्थ सत्र में जैन संस्कार विधि राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन ने जैन संस्कार विधि में करणीय व अकरणीय कार्य के बारे में बताते हुए मंगलभावना पत्रक के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कार्यशाला में उपस्थित सभी महानुभावों ने गुरु इंगित ७ से ८ के बीच शनिवारीय सामायिक की।

प्रथम दिन के रात्रिकालीन अंतिम सत्र में ग्रुप में उच्चारण शुद्धि का क्रम चला। जिसमें ३ ग्रुप के माध्यम से संभागियों की उच्चारण शुद्धि करवाई।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस प्रथम सत्र में मंचीय कार्यक्रम में अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा ने कार्यक्रम की शुरुआत की विधिवत घोषणा की। गरिमामय उपस्थिति अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत की रही। सभी ने अपने वक्तव्य में विचार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की। परिषद उपाध्यक्ष मुकेश जैन ने मंचीय कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक सौरभ जैन ने किया।

द्वितीय सत्र में जैन संस्कार विधि से विवाह संस्कार कैसे होता है, उसका डेमो दिखाया गया व विधि से संबंधित भ्रांतियों का समाधान भी किया।

दीक्षांत समारोह

मुनिश्री जी के सान्निध्य में दीक्षांत समारोह का आयोजन हुआ। सामूहिक नवकार महामंत्र के मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम शुरू किया गया। दीक्षांत समारोह में मुनिश्री जी ने प्रेरणा पाथेय में कहा कि संस्कारक व्यसनमुक्त और साधना युक्त हो उनका उच्चारण स्पष्ट हो, कार्यशाला में प्राप्त पाथेय को पुनः-पुनः दोहराया जाए, जिससे जहाँ भी संस्कारक जाएँ उनके उच्चारण की शुद्धि हो व सुनने वालों को भी कर्णप्रिय लगे।

मुख्य प्रशिक्षक महोदय ने ली गई परीक्षा के अनुसार ११ नए संस्कारकों को 'धी' श्रेणी संस्कारक की उपाधि की अर्हता प्रदान की।

कार्यशाला में पूर्व संभागियों के लिए ऑनलाइन उच्चारण शुद्धि कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

कार्यशाला की सारी व्यवस्था संभागियों से बात करना, कन्फर्मेशन लेना, समय-समय पर रिमाइंडर करना, यातायात व आवास व्यवस्था आदि सारा कार्य तेयुप, दिल्ली की टीम द्वारा किया गया। कार्यशाला संयोजक सौरभ जैन, मनीष जैन व राज्य आयाम सहयोगी प्रकाश सुराणा व अरुण गर्ग ने कार्यशाला को सफल बनाने में अपना पूर्ण योगदान दिया।

परीक्षण के पश्चात निम्न संस्कारक 'धी' श्रेणी संस्कारक बने–

अरविंद जैन-दिल्ली, नवीन जैन-दिल्ली, कुश जैन-दिल्ली, पराग जैन-दिल्ली, सुशील कुमार बैंगानी-दिल्ली, विजय कुमार जैन-दिल्ली, विकास बोथरा-दिल्ली, रोहित दुगड़-हनुमानगढ़, संजय कुमार जैन-हनुमानगढ़, गौरव जैन-सरदारपुरा, सुनील जैन-दिल्ली।

इस कार्यशाला के पश्चात देशभर में अभातेयुप मान्यता प्राप्त जैन संस्कारकों की संख्या ५३८ हो गई है।

मंगलभावना समारोह

ईरोड।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी का मंगलभावना का कार्यक्रम रेणु नखत के मंगलाचरण से प्रारंभ किया गया। सभा अध्यक्ष सुरेंद्र भंडारी, महिला मंडल अध्यक्षा सुनिता भंडारी, महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत, तेयुप अध्यक्ष सुभाष बैद द्वारा अपने भावों के साथ मंगलभावना व्यक्त की।

त्रिचि से समागत ज्योति सुराणा, रितिका दुगड़ द्वारा मधु गीतिका उपासक रमेश पटवारी ने अपने विचार रखे। सेलम से समागत व्योवृद्ध श्रावक केवलचंद बोहरा ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दुलीचंद पारख द्वारा और संयोजन महिला मंडल उपाध्यक्ष मंजु बोथरा ने किया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी, साध्वी मयंकप्रभा जी, साध्वी मेरूप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका से सबको संगीतमय कर दिया।

सुरों का महासंग्राम 'सरगम' का आयोजन

दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का आयाम सरगम–सुरों का महासंग्राम सीजन-४ के तीसरे चरण का क्वार्टर फाइनल तेयुप, दिल्ली के द्वारा भिक्षु ऑडिटोरियम, अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली, दिल्ली में आयोजित किया गया।

उत्तर व पूर्व भारत के ६ राज्यों से चयनित गायक कलाकारों की शानदार संगीतमय गीतों की प्रस्तुति के साथ यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण द्वारा हुई, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा ने पधारे हुए सभी प्रतिभागियों एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। समणीश्री मधुरप्रज्ञा जी के मंगलपाठ के साथ इस भव्य आयोजन की शुरुआत हुई।

इस कार्यक्रम में संगीतमय गीतों का संगान कर कुल ११ युगल कलाकारों ने भाग लिया। सभी संभागियों ने मधुर स्वर से अपनी प्रस्तुति दी, दोनों चरणों में अपनी अंतिम प्रस्तुति दे चुके प्रभागियों को परिषद् की ओर से पुरस्कृत किया गया।

निर्णायकगण ने निर्णय करते हुए ११ प्रतिभागियों में से ६ प्रतिभागियों को सेमीफाइनल चरण के लिए चुना। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने भी वक्तव्य द्वारा अपनी भावना प्रकट की, अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने सेमीफाइनलिस्ट प्रतिभागियों की घोषणा की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने तेयुप, दिल्ली को सरगम आयोजित करने की बधाई दी तथा उसकी सराहना की एवं सेमीफाइनल चरण में जाने वाले प्रतिभागियों के लिए शुभकामनाएँ संप्रेषित किया।

इस अवसर पर अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष व जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, सरगम प्रभारी सुनील चंडालिया एवं सहप्रभारी प्रसन्न पामेचा, राज्य आयाम सहयोगी नीलेश टेबा, अरुण गर्ग, शुभम बरड़िया, अभातेयुप से राकेश जैन, जतन श्यामसुखा, राजेश जैन, विकास चोरड़िया, निवर्तमान अध्यक्ष विकास बोथरा और तेयुप, दिल्ली के पूर्वाध्यक्ष, परामर्शक, पदाधिकारीगण कार्यसमिति टीम, संघीय संस्था के पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्तियों सहित दिल्ली के श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप सहमंत्री-१ विनय लिंगा एवं गायक मनीष पगारिया द्वारा किया गया। संयोजक राकेश बैंगानी और मुदित लोढ़ा ने अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया।

पारिवारिक सार-संभाल

औरंगाबाद।

तेयुप छत्रपती संभाजीनगर द्वारा तेयुप के साथियों की पारिवारिक सार-संभाल कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा और अभातेयुप सदस्य, तेयुप, औरंगाबाद के मंत्री अंकुर लुणिया ने दीपेश सेठिया, दर्शन सेठिया, श्रेयांश सेठिया, मनीष सेठिया, डॉक्टर विमलेश सेठिया, आशीष सेठिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। पारिवारिक सार-संभाल के दौरान तेयुप की नई टी-शर्ट वितरण, डिजिटली डाटा कलेक्शन का कार्य संपन्न किया जा रहा है। तेयुप परिषद द्वारा सभी परिवारों को सहयोग के लिए आभार प्रकट किया।

✦ काम अच्छा करो। प्रशंसा पाने का प्रयास मत करो। प्रशंसा के क्षणिक सुख के लिए शाश्वत सुख से दूर मत बनो।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महाराष्ट्र की धरती पर संत शिरोमणि आचार्यश्री महाश्रमण का पदार्पण

जनमानस में धार्मिक व नैतिक चेतना का जागरण हो : आचार्यश्री महाश्रमण

बोरड़ी, (पालघर), २८ मई, २०२३

संत शिरोमणि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातः वृहद मुंबई में २०२३ का चातुर्मास एवं २०२४ का मर्यादा महोत्सव करने हेतु महाराष्ट्र की धरा में पदार्पण किया। पूज्यप्रवर के चरण कमल महाराष्ट्र की धरा को छूते ही वह धन्य-धन्य हो गई, क्योंकि वह इस बार धर्म धरती बनने जा रही है। पूज्यप्रवर धवल सेना के साथ गोलवड़ पधारे। आज ही भारतीय लोकतंत्र के नए संसद भवन का राष्ट्र को लोकार्पण हुआ है।

महाराष्ट्रवासियों को धर्म देशना प्रदान करते हुए धर्मज्ञाता ने फरमाया कि हमारी दुनिया में कर्म चलता है, आदमी विभिन्न प्रवृत्तियाँ करता है। मन से सोचता है, कल्पना-चिंतन करता है। वाणी से बोलता है, शरीर से भी हलन-चलन आदि अनेक प्रवृत्तियाँ करता है। ये प्रवृत्ति-आचरण ही कर्म है।

चिंतन का विषय यह है कि इस कर्म के साथ धर्म जुड़ा हुआ है या नहीं। शास्त्र में कहा गया है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल होता है। आदमी को मंगल अभिष्ट है। मंगल की कामना भी की जाती है। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। आत्म शुद्धि संदर्भ में जो धर्म है, वह इन तीन शब्दों में समाविष्ट हो गया। जो वीर पुरुष होते हैं, वो महान पथ पर समर्पित हो जाते हैं।

भगवान महावीर तथा आचार्य भिक्षु का के जीवन में काफी समानता देखने को मिलती है। आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन में एक क्रांति की ओर यह पंथ बना। एक क्रांति उन्होंने की और पंथ बन गया। आज हम उसी तेरापंथ में साधना कर रहे हैं। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चल रही है। आचार्य तुलसी ने महाराष्ट्र में प्रथम चतुर्मास किया था। आज हमारा यहाँ आना हुआ है। अणुव्रत यात्रा भी चल रही है।

महाराष्ट्र की आम जनता में भी सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। मुंबई के श्रावक-श्राविका समाज में भी धर्म की अच्छी आराधना होती रहे। आध्यात्मिक, धार्मिक गतिविधियों को और आगे बढ़ाते रहें। अनेक साधु-साध्वियाँ महाराष्ट्र में प्रवासरत हैं। गति मंद भले ही हो, पर सही दिशा में हो। गति बंद न हो। गतिमत्ता बनी रहे। अनेक चारित्रात्माएँ महाराष्ट्र से है।

भारत तो एक राष्ट्र है और यह महाराष्ट्र है, यह विशेष बात है। मुनि महेंद्र कुमार जी की भी स्मृति हो रही है। वे आगम-मनीषी थे। हमारे साधु-साध्वियाँ जितने यहाँ हैं, धार्मिक कार्यों का विकास करते रहें। श्रावक-श्राविकाएँ खूब आध्यात्मिक उत्साह के साथ विकास करते रहें। मुंबई की व्यवस्था समिति के पास लंबे काल की व्यवस्थाएँ हैं। सारे कार्य अच्छे हों। महाराष्ट्र में अच्छे रूप में परिवर्तन होता रहे। जनमानस में धर्म की प्रभावना बनी रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने अपने उद्बोधन में महाराष्ट्रवासियों को मंगल प्रेरणा प्रदान की। महाराष्ट्र से संबद्ध मुनि चिन्मयकुमार जी, मुनि अर्हत कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। महाराष्ट्र के अल्पसंख्यक मंत्री हाजी अराफात शेख ने आचार्यश्री के दर्शन किए। तेरापंथ महिला मंडल, घोलवड़, मुंबई एवं पुणे तेरापंथ समाज ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। मुंबई चातुर्मास प्रवास समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, हितेश हिरण एवं प्रिंसिपल विनीता शाह ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

मनुष्य में दया व करुणा भाव होना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

सिलवासा, (दादरा नगर हवेली), २४ मई, २०२३

संत शिरोमणी आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः दादरा से लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर दादरा की राजधानी सिलवासा पधारे। महामनीषी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अनुकंपा एक शब्द है, जो अहिंसा के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। अनुकंपा-दया का भाव रखने वाला अपनी आत्मा को पाप से बचा सकता है।

आचार्य भिक्षु ने लौकिक अनुकंपा और आध्यात्मिक अनुकंपा को अलग-अलग समझाया है। पाप कर्मों से आत्मा को बचाना दया हो जाती है। आदमी दूसरों को पीड़ा न पहुँचाए। हो सके तो आध्यात्मिक चित्त-समाधि पहुँचाए। साधु तो अहिंसा मूर्ति, दया मूर्ति होना चाहिए। यह मेतार्य मुनि के प्रसंग से समझाया कि साधु तो समता में रहे।

हमारा आदर्श हमारे सामने रहे तो हम साधना में आगे बढ़ सकते हैं। मेतार्य मुनि धर्मरुचि अणगार आदि ये साधु संस्था के सितारे हैं, इनसे हमें प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। गृहस्थों के जीवन में अहिंसा-दया की भावना देखने को मिल सकती है। प्राणी मात्र के प्रति करुणा का भाव हो।

आदमी में दया-अहिंसा की भावना हो तो यहाँ भी ठीक है और आगे भी अच्छा होने की संभावना हो सकती है। गृहस्थ अनावश्यक हिंसा न करें। व्यापार में भी नैतिकता रहे। धोखाधड़ी न हो। कर्मवाद का सिद्धांत है कि तुम जैसा करोगे, वैसा भरोगे। पुण्योदय के समय भी संयम रखें। आदमी के जीवन में दया-अहिंसा का भाव रहे, यह काम्य है।

सिलवासा में सब लोगों में खूब धर्म की भावना रहे। अध्यात्म पथ पर चलने का प्रयास होता रहे, मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि प्राणी तीन प्रकार के होते हैं—देव, पिशाच और मनुष्य। देव कभी किसी को कष्ट नहीं पहुँचाते जबकि पिशाच स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरों को कष्ट देते हैं। मनुष्य अपना भी हित करता है और दूसरों का भी हित करता है। हम देख रहे हैं कि आचार्यप्रवर किस तरह लोगों के हित-कल्याण की कामना करते हैं, उत्थान की कामना करते हैं। परोपकार उनका ध्येय बन जाता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष नितेश भंडारी, जिगर शाह सकल जैन समाज से राजेश दुगड़, के०एल० जैन, एसडीपीओ सिलवासा, सिद्धार्थ जैन (पुलिस अधिकारी) ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

समय का सही मूल्यांकन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

दहाणुरोड, २६ मई, २०२३

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी सृष्टि में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव ये चार चीजें हैं, इनमें एक है—काल-समय।

समय अपने ढंग से व्यतीत होता रहता है। अतीत हुआ समय फिर वापस वर्तमान नहीं बनता है। दिन-रात में २४ घंटे होते हैं, इनका आदमी क्या उपयोग करता है, यह चिंतन का विषय होता है। समय को व्यर्थ मत जाने दो। जैसे मेघ बरसता है, पानी गिरता है, पर कौन पानी का क्या उपयोग कर रहा है, यह धातव्य है।

समय का सदुपयोग या दुरुपयोग भी हो सकता है। तो अनुपयोग भी हो सकता है। विचार करें कि इस अनमोल जीवन में क्या किया? दीर्घायुष्य का महत्त्व हो सकता है, पर उससे ज्यादा महत्त्व है कि जीवन कैसे जी रहे हैं, क्या कर रहे हैं? थोड़े जीवन काल में भी अध्यात्म का बढ़िया काम किया तो थोड़ा जीवन काल भी बड़ा महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

अंगारा बनकर जीना मुहूर्त भर भी अच्छा है और धुआँ बनकर जीना कोई खास बात नहीं है। बालावस्था में साधु बनकर साधना व सेवा करना कितना श्रेयस्कर होता है। रोज सूर्य उदय होता है और हमारे जीवन का एक टुकड़ा लेकर चला जाता है। एक-एक मिनट का महत्त्व होता है। हम समय का मूल्यांकन करें। पंडित! तुम समय को जानो। समय एक धन है, सोच-समझकर खर्च करें। अच्छे कार्यों में समय लगाना चाहिए।

सुबह-सुबह अमृत वेला की सामायिक अमृत है। पहले धर्म का योजन ले लें। शनिवार की सायं ७ से ८ के बीच तो सामायिक अवश्य हो। सामायिक में भी शुभ योग में रहें। विद्यार्थियों के जीवन में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार हों। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। समय का बढ़िया उपयोग हो।

पूज्यप्रवर ने स्कूल के विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए। प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि विद्यार्थी का ज्ञान अच्छा बढ़े, सिर्फ अंक पाना ही लक्ष्य न हो। जीवन अच्छा रहे।

महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने गीत प्रस्तुत किया, स्कूल के प्रिंसिपल योगेश पाटिल, दिलीप गुंदेचा, दीपमाला गुंदेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति व अणुव्रत समिति द्वारा स्कूल परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**